



कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

वसुधा



**संपादन व प्रकाशन
डॉ. स्नेह ठाकुर**

**भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
लिम्का बुक रिकॉर्ड होल्डर**

शहर के लोग

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

आग लगी है
क्षितिज-वनों में
लपटें उठ रही हैं
जैसे चौकड़ी भरते द्वाभा के
द्रुतगामी नीले हरिन
जैसे सुनहरे रंगों की बकरियों के शिशु
छलांगें भर रहे हैं
अपने आश्रय-स्थल की ओर जाते हुए.

शहर के नीचे
उग रहा है
एक कंकरीट का गुलाब
गतिविहीन डंठल लिए
किसी अधःकोष्ठ की
कर रहा है प्रतीक्षा
चांद्रायण पराग के लिए
और आग की लपटों में साँस लेने को
कंकरीटी गुलाब की पंखुरियों में खोए
अदृश्यप्राय
दौड़ते लोग
सुखों से ऊबते लोग
दुःखों में डूबते लोग
शहर के लोग.



वसुधा

सम्पादन व प्रकाशन : डॉ. स्नेह ठाकुर

(पोस्ट-डॉक्टरल फ्लोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
मानसिक स्वाधीनता के लिए		
हिन्दी की दरकार	प्रो. गिरीश्वर मिश्र	७
हिन्दी की बिन्दी में शान	रिखब चंद राँका 'कल्पेश'	९
उसका क़सूर क्या था?....	मधु अरोड़ा	१०
ऐ मेरी क़लम	शिव चौहान 'शिव'	१८
सर्वकालिक कृष्ण	सुशील शर्मा	१९
मृगतृष्णा	मोहनजीत कुकरेजा	२१
फ़ादर्स डे	मदन लाल गुप्ता	२२
यह देश भारत	अरुण तिवारी	२५
दुर्गारानी	डॉ. गोपेश मोहन जैसवाल	२७
ग़ज़ल	देवकी नन्दन 'शांत'	३१
लावारिस कुत्तों की अनकही त्रासदी	तारकेश कुमार ओझा	३२
स्वयं मिट्टी में मिलकर	विशम्भर व्यग्र	३३
सुभद्रा कुमारी चौहान	मनोज कुमार शुक्ल 'मनोज'	३४
तुलसी बनाम बैसिल	कादम्बरी मेहरा	३५
सितम्बर की हवा	डॉ. सुषम बेदी	४१
ज्ञान के मंदिरों का अनिश्चय	डॉ. चन्द्र कान्त तिवारी	४२
पैबंद	डॉ. आस्था नवल	४४
शहर के लोग	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि	१अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य है। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्भूत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00, भारत - रु. ६००.००

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>

e-mail: dr.snehtakore@gmail.com

सम्पादकीय

भारत में सम्पन्न हुए विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक चुनाव ने अपनी एक मिसाल कायम कर दी है। माननीय मोदी जी की प्रशंसनीय जीत को नमन और उन्हें वसुधा एवं अपनी ओर से बधाई तथा शुभ-कामनाएँ प्रेषित करती हैं। माननीय मोदी जी का अप्रतिम, ओजस्वी, अद्भुत नारा “सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास” और उनका भविष्य का दृष्टिकोण “विरासत के साथ विज्ञन” सात्विक विचारों से परिपूर्ण है। ईश्वर उन्हें इन्हीं सद्भावनाओं की ऊर्जा का हाथ पकड़े आगे ही आगे प्रगति-पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा देता रहे। विजयोपरांत उनके द्वारा दिया गया प्रेरणादायी भाषण यहाँ यथावत् उद्धृत कर रही है –

भारतीय जनता पार्टी के यशस्वी, परिश्रमी अध्यक्ष भाई अमित शाह जी, भारतीय जनता पार्टी के सभी वरिष्ठ साथी और प्यारे भाइयो और बहनो,

आज स्वयं मेघराज भी इस विजयोत्सव में शरीक होने के लिए हमारे बीच हैं।

२०१९ लोकसभा का जनादेश, हम सब देशवासियों के पास नए भारत के लिए जनादेश लेने के लिए गए थे। आज हम देख रहे हैं, देश के कोटि-कोटि नागरिकों ने इस फकीर की झोली को भर दिया। मैं भारत के १३० करोड़ नागरिकों का सर झुकाकर के नमन करता हूँ। लोकतांत्रिक विश्व में २०१९ का ये जो मतदान का सिर्फ आकड़ा है, ये अपने आप में लोकतांत्रिक विश्व के इतिहास की सबसे बड़ी घटना है, पूरे विश्व की ये सबसे बड़ी घटना है। देश आजाद हुआ, कितने लोकसभा के चुनाव हुए, लेकिन आजादी के बाद, इतने चुनाव होने के बाद सबसे अधिक मतदान इस चुनाव में हुए हैं। और वो भी ४०-४२ डिग्री गर्मी के बीच में, ये अपने आप में भारत के मतदाताओं की जागरूकता, लोकतंत्र के प्रति भारत की प्रतिबद्धता, पूरे विश्व को इस बात को रजिस्टर करना होगा, पूरे विश्व को भारत की लोकतांत्रिक शक्ति को पहचानना होगा।

इस अवसर पर मैं, इस लोकतंत्र के उत्सव में, लोकतंत्र के खातिर जिन-जिन लोगों ने बलिदान दिया है, जो लोग धायल हुए हैं उनके परिवार के प्रति मेरी सम्मेदना प्रकट करता हूँ। और लोकतंत्र के इतिहास में लोकतंत्र के लिए मरना, ये मिसाल आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी। मैं चुनाव आयोग को, सुरक्षाबलों को, इस लोकतंत्र की व्यवस्था को सँभालने वाले हर किसी को उत्तम तरीके से लोकतंत्र में विश्वास बढ़ाने वाली व्यवस्था देने के लिए, बहुत ही उत्तम तरीके से चुनाव प्रक्रियाओं को सम्पन्न कराने के लिए हृदयपूर्वक बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियो, जब महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ तब श्री कृष्ण से पूछा गया कि आप किसके पक्ष में थे। मैं समझता हूँ, उस समय महाभारत के काल में भगवान श्री कृष्ण ने जो जवाब दिया था वो आज २१वीं सदी में, २०१९ के इस चुनाव में हिंदुस्तान के १३० करोड़ नागरिकों ने, जनता जनार्दन ने श्री कृष्ण के रूप में जवाब दिया है। और श्री कृष्ण ने जवाब दिया था कि मैं किसी के पक्ष में नहीं था, मैं तो सिर्फ हस्तिनापुर के लिए हस्तिनापुर के पक्ष में खड़ा था। आज १३० करोड़ नागरिक श्री कृष्ण के रूप में भारत के लिए खड़े हैं, भारत के लिए मतदान किया है और इसलिए देश के सामान्य नागरिक की ये भावना भारत के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी है। इस चुनाव में मैं पहले दिन से कह रहा था, ये चुनाव कोई दल नहीं लड़ रहा है, कोई उम्मीदवार नहीं लड़ रहा है, कोई नेता नहीं लड़ रहा है, ये चुनाव देश की जनता लड़ रही है। जिनके आँख-कान बंद थे उनके लिए मेरी बात समझना मुश्किल था, लेकिन मेरी उस भावना को जनता जनार्दन ने प्रकट कर दिया है और इसलिए अगर कोई विजयी हुआ है तो हिंदुस्तान विजयी हुआ है, अगर कोई विजयी हुआ है तो लोकतंत्र विजयी हुआ है, अगर कोई विजयी हुआ है तो जनता जनार्दन विजयी हुई है। और इसलिए हम सभी भारतीय जनता

पार्टी के कार्यकर्ता, हम सभी एनडीए के साथी नम्रतापूर्वक इस विजय को जनता जनार्दन के चरणों में समर्पित करते हैं।

इस लोकसभा के चुनाव में जो विजयी हुए हैं, उन सभी विजेताओं को मैं हृदयपूर्वक बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और सभी विजयी, किसी भी दल से जीत कर आए हों, किसी पार्श्वभूमि से आए हों, लेकिन देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रतिबद्धता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर के भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए विजयी सभी जन, सभी प्रतिनिधि आने वाले दिनों में देश की सेवा करेंगे, इस विश्वास के साथ मैं उन सब को शुभकामनाएँ देता हूँ।

चार राज्यों में भी चुनाव थे, ओडिशा, आन्ध्र, सिक्किम, अरुणाचल। उन विधानसभाओं में जो प्रतिनिधि चुन कर आए हैं, उन राज्यों की जनता ने जिन सरकारों को चुना है उनका भी मैं बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। और मैं उन सभी सरकारों को विश्वास दिलाता हूँ कि भारतीय जनता पार्टी भारत के संविधान को समर्पित है, फेडरलिज्म पर समर्पित है और इसलिए इन चीजों को विजय प्राप्त करने वाले लोगों को मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि केंद्र सरकार उन राज्यों की विकास यात्रा में पूरी तरह कंधे से कंधा मिलाकर के उनके साथ चलेगी। जैसा हमारे अध्यक्ष जी ने कहा की भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ता, उनके परिश्रम, उनका पुरुषार्थ, इतना गर्व होता है कि जिस दल में हम हैं उस दल में ऐसे दिलदार लोग हैं। कोटि-कोटि कार्यकर्ता सिर्फ एक ही भाव, भारत माता की जय और कुछ नहीं, वे कार्यकर्ता, वे भारतीय जनता पार्टी परिवार का प्रत्येक साथी कोटि-कोटि अभिनंदन का अधिकारी है, जिसने निस्वार्थ भाव से लोकतंत्र का झंडा ऊँचा रखते हुए देश के सामान्य मानव की आशाओं-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए जी-जान से, लोकतांत्रिक तरीके से इस पूरे लोकशाही के उत्सव में शरीक हो कर के उसकी आन, बान, शान बढ़ाने में यशस्वी भूमिका निभाई है।

भारतीय जनता पार्टी की विशेषता है और विशेषता ये है कि हम कभी दो भी हो गए, लेकिन हम कभी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए, आदर्शों को ओङ्गल नहीं होने दिया, ना रुके, ना थके, ना झुके, कभी हम दो भी हो गए तो भी और आज दोबारा आ गए। दो से दोबारा आने तक इस यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। दो थे तब भी निराश नहीं हुए, दोबारा आए तब भी ना हमारी नम्रता छोड़ेंगे, ना हमारा विवेक छोड़ेंगे, ना हमारे आदर्शों को छोड़ेंगे, ना हमारे संस्कार छोड़ेंगे।

साथियो, अभी हमारे अध्यक्ष जी चुनाव नतीजों की कुछ हाईलाइट्स बता रहे थे। मैं स्वयं आज काफी व्यस्त था उसके कारण चुनाव नतीजों पर मेरा ध्यान नहीं था और इसलिए मुझे पूरी जानकारी भी नहीं है कि कहाँ क्या हुआ, कैसे हुआ, लेकिन अध्यक्ष जी ने जो विस्तार से बताया, मैं आज रात के बाद समय निकाल कर के देखूँगा कि आज दिन भर क्या-क्या हुआ है। लेकिन जो अध्यक्ष जी ने बताया, ये अपने आप में हिंदुस्तान के पॉलीटिकल पंडितों को, उनकी सारी २०वीं सदी की सोच को छोड़ना पड़ेगा। ये २१वीं सदी है, ये नया भारत है, ये चुनाव का विजय, कोई कहता है मोदी-मोदी, ये मोदी का विजय नहीं है। ये देश में ईमानदारी के लिए तड़पते हुए नागरिक की आशा-आकांक्षाओं की विजय है, ये २१वीं सदी के सपनों को लेकर चल पड़े नवजवान का विजय है। ये विजय आत्मसम्मान, आत्मगौरव के साथ एक शौचालय के लिए तड़पती हुई, उस माँ की विजय है। ये विजय उस बीमार व्यक्ति का है जो चार-चार, पाँच-पाँच साल से पैसों के अभाव में उपचार नहीं करवा पा रहा था, जिसका आज उपचार हो पाया उसके आज आशीर्वाद की विजय है। ये विजय देश के उन किसानों की है जो पसीना बहा कर के राष्ट्र का पेट भरने के लिए अपने पेट को भी परेशान करता रहता है और खुद जहमत उठाता रहता है, ये उसकी विजय है। ये उन ४० करोड़ असंगठित मजदूरों की विजय है, जिनको पहली बार, लेफ्ट के लोगों ने विचार बहुत रखे होंगे, लेकिन इस देश में ऐसी सरकार जिस पर लेफ्ट का लेबल तो नहीं है,

लेकिन ४० करोड़ लोगों के लिए, असंगठित कामदारों के लिए पेंशन योजना लागू कर के उनको सम्मानित जीवन देने का काम किया है, ये उनकी विजय है। जो बेघर जिंदगी गुजारते-गुजारते आज पक्के घर में रहने गए हैं, ये उनकी विजय है और जिनका २०२२ तक पक्का घर बनना तय है उनका विजय है।

भाइयो-बहनो, ये विजय उन मध्यम वर्ग के परिवार का है, जो कानून-नियम का पालन करता रहा, जो देश की भलाई के लिए टैक्स देता रहा, लेकिन ना कभी उसे सम्मान मिला, ना ही उसे कभी भरोसा हुआ कि जो वो टैक्स देता है वो देश के काम आता है क्या? पाँच साल में अनुभव किया की जो दे रहा है वो सही जगह पर जा रहा है, सही काम आ रहा है। उस मध्यम वर्ग को जो संतोष हुआ है वो संतोष इन चुनाव नतीजों में नजर आ रहा है। ईमानदारी को जो ताकत मिली है उस ताकत को इस चुनाव ने एक नई स्वीकृति दी है। और इस प्रकार से जो बदलाव आया है उस बदलाव ने ये परिवर्तन लाया है।

भाइयो-बहनो, हमारे देश में ये चुनाव ऐसा हुआ, वरना आपने देखा होगा ३० साल तक लगातार देश में विशेष रूप से, वैसे ये ड्रामेबाजी तो लम्बे समय से चल रही है। एक ऐसा प्रिंटआउट, एक ऐसा टैग फैशन हो गई थी, कुछ भी करो उसको लगा लो गंगा स्नान करने जितना पुण्य मिल जाता था और पूरी तरह नकली, उस टैग का नाम था सेक्यूलरिज्म और नारे लगते थे सेक्यूलर एक हो जाओ-सेक्यूलर एक हो जाओ। आपने देखा होगा २०१४ से १९ आते-आते उस पूरी जमात ने बोलना ही बंद कर दिया। इस चुनाव में एक भी राजनीतिक दल सेक्यूलरिज्म का नकाब पहनकर देश को गुमराह करने की हिम्मत नहीं कर पाया है। दूसरा, हिंदुस्तान में कोई चुनाव ऐसा नहीं गया, जिसके केंद्र बिंदु में मँहगाई ना रही हो, ये चुनाव ऐसा है जहाँ मँहगाई पर एक भी विरोधी दल ने आरोप नहीं लगाया। ये चुनाव ऐसा है कि जिसमें हिंदुस्तान के पिछ्ले कोई भी चुनाव उठा लीजिए, सब चुनाव भ्रष्टाचार के मुद्दे से रँगे गए थे। भ्रष्टाचार के मुद्दों पर चुनाव लड़े गए थे, भ्रष्टाचार के मुद्दों पर जवाब देने पड़े थे। ये पहला चुनाव ऐसा था जिसमें देश का कोई राजनीतिक दल पाँच साल के शासन पर भ्रष्टाचार का एक आरोप नहीं लगा पाया। भारत के लोकतंत्र में ये तीन चीजें कांस्टेंट रही हैं, इस चुनाव में मिसिंग थीं। इसलिए पॉलीटिकल पंडितों को समझ नहीं आ रहा था किस तराजू से चीजों को तौला जाए।

भाइयो-बहनो, इस चुनाव ने २१वीं सदी की एक मजबूत नींव हमारे सामाजिक, सार्वजनिक, राजनीतिक जीवन के लिए निर्मित की है और मैं चाहूँगा जो देश का उज्ज्वल भविष्य चाहते हैं। सरकार कौन बने, किसकी बने, कौन आए-कौन जाए, वो तो जनता तय करती रहेगी, लेकिन भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए, देश की एकता और अखंडता के लिए अब भारत ने, भारत की जनता ने इस चुनाव में एक नया नैरेटिव देश के सामने रख दिया है। सारे समाजशास्त्रियों को अपनी पुरानी सोच पर पुनर्विचार करने के लिए देश के गरीब से गरीब व्यक्ति ने मजबूर कर दिया है, और वो क्या है? अब इस देश में सिर्फ दो जाति बचेगी, दो जाति ही रहने वाली है और देश इन दो जाति पर ही केंद्रित होने वाला है। ये जाति के नाम पर खेल खेलने वाले लोगों को बहुत बड़ा प्रहार इस चुनाव में हुआ है। और दो जाति है, कौन सी? अब २१वीं सदी में भारत की एक जाति है गरीब और दूसरी जाति है देश को गरीबी से मुक्त कराने के लिए कुछ ना कुछ अपना योगदान देने वालों की। एक वो हैं जो गरीबी से बाहर आना चाहते हैं, दूसरे वो हैं जो गरीबी से देश को मुक्त कराना चाहते हैं। ये दो ही जाति हैं और इसलिए हमें २१वीं सदी में इन दोनों को सशक्त करना है। गरीबी से बाहर जिसको लाना है उसको भी सशक्त करना है और गरीबी से बाहर लाने में जो बढ़-चढ़ कर मदद कर रहा है उसको भी ताकतवर बनाना है, ये दो शक्तियाँ इस देश पर से गरीबी के कलंक को मिटा सकती हैं, इस सपने को लेकर के हमें चलना है।

दोस्तों, ये चुनाव इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसी कालखंड में, ये २०१९ से २०२४ ये पाँच साल का कार्यकाल और इतना प्रचंड जनमत बहुत बड़ी घटना है जो, विश्व को अन्वन्भित करने वाली घटना है। पल भर याद कीजिए, यही समय है जब महात्मा गाँधी के १५०वीं वर्षगाँठ देश मनाएगा। यही समय है जब २०२२ में

भारत आजादी के ७५ साल मनाएगा, गाँधी-१५० और भारत-७५। इन पाँच सालों में १९४२ से १९४७ के साथ हम प्रतिफल जोड़कर के देखें। १९४२ से १९४७ देश का हर व्यक्ति जो भी करता था आजादी के लिए करता था। स्कूल छोड़ देता था आजादी के लिए, जेल जाता था आजादी के लिए, खादी पहनता था आजादी के लिए, झाड़ू लगाता था आजादी के लिए, बच्चों को पढ़ाई कराता था आजादी के लिए, स्वदेशी का पालन करता था आजादी के लिए। १९४२ से ४७ तक एक जन आंदोलन ने देश को आजादी दिलाने में बहुत बड़ी मदद की।

ये २०१९ से २०२४, ये कालखंड देश के आजादी के सिपाहियों का स्मरण करने का है और देशवासी भी तय करें कि इन पाँच साल का हम १३० करोड़ लोग, उस समय तो जनसंख्या भी इतनी नहीं थी और बड़ी-बड़ी सल्तनत को समाप्त कर दिया था। आज हम १३० करोड़ लोग हैं, अगर हम संकल्प कर लें कि देश को सभी मुसीबतों से मुक्त करना है, देश को एक समृद्ध राष्ट्र की तरफ ले जाना है, एक विकसित भारत बनाकर के साँस लेनी है। हमारे गरीब से गरीब की आवश्यकताओं को पूर्ण करना है, अगर २०१९ से २०२४ जो स्पिरिट आजादी का था वो स्पिरिट समृद्ध भारत के लिए बन जाए, स्वतंत्र भारत का वो स्पिरिट समृद्ध भारत के लिए बन जाए, २०२४ के पहले देश को हम नई ऊँचाइयों पर हम ले जा सकते हैं। और इसलिए दोस्तो, इस चुनाव को हमें नम्रता से स्वीकारना है। सरकार तो बहुमत से बनती है और जनता ने बना भी दी है, लेकिन लोकतंत्र के संस्कार, लोकतंत्र का स्पिरिट भारत के संविधान का स्पिरिट हमें इस बात के लिए जिम्मेवारी देता है कि सरकार भले बहुमत से बनती हो, लेकिन देश सर्वमत से बनता है। और इसलिए मैं आज सार्वजनिक रूप से कहता हूँ कि चुनाव में क्या हुआ, कैसे हुआ, कौन क्या बोला, मेरे लिए वो बात बीत चुकी है। हमें आगे देखना है, हमें सब को साथ लेकर के चलना है, हमारे घोर विरोधी होंगे उनको भी साथ लेकर चलना है, देशहित के लिए चलना है और इतने बड़े प्रचंड बहुमत के बाद भी पूरी नम्रता के साथ चलना है, लोकतंत्र की मर्यादा के बीच चलना है। संविधान ही हमारा सुप्रीम है, उसी की छाया में, उसी के हर शब्द के भाव को पकड़ते हुए हमें चलना है और उस काम में भारतीय जनता पार्टी का कोई कार्यकर्ता भी, हिंदुस्तान का हर कोई नागरिक भी उसी उमंग और उत्साह के साथ हमसे जुड़ेगा, ये मेरा विश्वास है।

भाइयो-बहनो, देश ने हमें बहुत दिया है, मैं आज इस पल देशवासियों के सामने भी कुछ कहना चाहता हूँ। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आपने इस फकीर की झोली तो भर दी। मेरे प्यारे देशवासियों आपने इस फकीर की झोली भर दी है, बड़ी आशा-अपेक्षा के साथ भरी है मैं जानता हूँ। आपकी आशा-आकांक्षा, आपके सपने-आपके संकल्प बहुत कुछ इसके साथ जुड़ा हुआ है मैं भली-भाँति इस बात की गम्भीरता को समझता हूँ, लेकिन मैं इस देश को कहूँगा कि आपने २०१४ में, मुझे ज्यादा जानते नहीं थे लेकिन आपने भरोसा किया। २०१९ में आपने मुझे ज्यादा जानने के बाद उसमें और ज्यादा ताकत डाली है, मैं इसके पीछे की भावना को भली-भाँति समझता हूँ। जैसे अमित भाई कह रहे थे, बहुत वर्षों के बाद एक चुनी हुई सरकार दूसरी बार पूर्ण बहुमत से और पहले से अधिक ताकत के साथ जीतकर आए, इसका मतलब देश की जनता का कितना भरोसा है और भरोसा जैसे बढ़ता है जिम्मेवारी और ज्यादा बढ़ती है। इसलिए मैं देशवासियों को कहना चाहूँगा कि आपने मुझे जो दायित्व दिया है, हमारे एनडीए के सभी साथियों ने जो हमें समर्थन दिया है। एनडीए के साथियों ने भी मिलकर के पूरी मेहनत की है तब जा कर के मैं देशवासियों से आज जरूर कहना चाहूँगा और इसे मेरा वादा मानिए, मेरा संकल्प मानिए, मेरा समर्पण मान लीजिए, मेरी प्रतिबद्धता मानिए, लेकिन मैं जरूर कहूँगा कि आपने जो मुझे जो फिर से काम दिया है - आने वाले दिनों में मैं बदइरादे से, बदनीयत से कोई काम नहीं करूँगा। काम करते-करते गलती हो सकती है लेकिन बदइरादे से, बदनीयत से मैं कोई काम नहीं करूँगा। दूसरा देशवासियों आपने मुझे इतना बड़ा भरोसा, इतनी बड़ी जिम्मेवारी दी है तब मैं

देशवासियों को फिर से कहूँगा कि मैं मेरे लिए कुछ नहीं करूँगा। और तीसरी बात मैं सार्वजनिक रूप से कहना चाहूँगा, मेरे समय का पल-पल, मेरे शरीर का कण-कण सिर्फ और सिर्फ देशवासियों के लिए है। मेरे देशवासी आप जब भी मेरा मूल्यांकन करें, इन तीन तराजू पर जरूर मुझे कसते रहना, कभी कोई कमी रह जाए तो मुझे कोसते रहना, लेकिन मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूँ मैं सार्वजनिक रूप से जो बातें बताता हूँ उसको जीने के लिए भरपूर प्रयास करता हूँ।

मैं आज हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष, उनकी पूरी टीम, राज्यों के अध्यक्ष, राज्यों की टीम, पार्टी के पन्ना प्रमुख तक के लोग, लोग पन्ना प्रमुख की मजाक उड़ाते रहते हैं, लेकिन उस पन्ना प्रमुख की ताकत क्या होती है वो इस चुनाव में पता चल गया। पन्ना प्रमुख से लेकर राष्ट्रीय प्रमुख तक इन लक्षावधि कार्यकर्ताओं को, उनके परिश्रम को, उनकी प्रतिबद्धता को एक बार हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, धन्यवाद।

मेरे साथ बोलिए, भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय, वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम।



भारत के प्रधान मंत्री स्वप्रदृष्टा माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी का प्रेरणादायी, ओजस्वी, कल्याणकारी नारा “सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास” जिसकी प्रयोजना में भारत के उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न निहित है, उसकी मंगल-पूर्ति हेतु वसुधा की ओर से उन्हें अनेकानेक शुभकामनाएँ अर्पित –

सादर, सस्नेह,

स्नेह ठाकुर



मानसिक स्वाधीनता के लिए हिन्दी की दरकार

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

(पूर्व कुलपति महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय)

स्वतंत्र भारत के सत्तर साल से ऊपर हो चुके हैं पर राज भाषा हिन्दी को लेकर आज भी एक संभ्रम की स्थिति बनी हुई है। वस्तुतः (अधोषित) राज भाषा अँग्रेजी ही बनी हुई है। राजकीय कार्य में हिन्दी अभी भी अनुवाद की ही भाषा है और शिक्षा तथा ज्ञान जैसे आधारभूत क्षेत्रों में उसकी पहुँच सीमित है। न्याय और स्वास्थ्य के क्षेत्रों की दृष्टि से भी हिन्दी की शक्ति दुर्बल है। कुल मिला कर वह पूर्ण राज भाषा के काबिल नहीं हो सकी है और भविष्य में कब होगी इसका कोई अता-पता नहीं है। दूसरी ओर हिन्दी राग के लिए आलाप लिया जाना राष्ट्रीय पंचांग का हिस्सा बन चुका है। इसका मुहूर्त आते ही प्रदेश और देश के स्तर पर हिन्दी को लेकर सम्मान, सत्कार, संगोष्ठी, कार्यशाल, अधिवेशन, पुरस्कार, अभिनंदन और सम्मेलन आयोजित होने लगते हैं।

वैसे स्थापित व्यवस्था के तहत संसद की राजभाषा समिति निरंतर देश भर दौड़-दौड़ कर विभिन्न संस्थानों में हिन्दी की ज़मीनी हक्कीकत का जायज़ा लेती हैं और उसे माननीय राष्ट्रपति जी के संज्ञान में लाती हैं। माननीय राष्ट्रपति जी तत्सम्बंधित आदेश भी पारित करते हैं। भारत सरकार के प्रत्येक मंत्रालय की अपनी - अपनी राजभाषा सलाहकार समितियाँ हैं। एक केंद्रीय हिन्दी समिति भी है। हिन्दी की उन्नति के लिए सरकारी बजट में व्यवस्था है। सरकारी तंत्र मुस्तैद है और एक स्तर पर हिन्दी के प्रति अपने ढंग से संवेदनशील भी है। यह उसकी संवैधानिक बाध्यता भी है। हिन्दी भाषी प्रदेशों की सरकारों ने भी अपने-अपने स्तर पर हिन्दी के सम्बर्धन के लिए व्यवस्थाएँ खड़ी कर रखी हैं। हिन्दी की अकादमियाँ और अनेक संस्थान भी बने हैं जो पुरस्कारों और आयोजनों द्वारा हिन्दी को प्रोत्साहित करने का कार्य करते हैं। ये सारे प्रयास सरकारी तंत्र-जाल में औपचारिकताओं के निर्वाह तक सिमट जाते हैं। दूसरी ओर कभी निःस्पृह हिन्दी सेवा के संकल्प के साथ बनी नागरी प्रचारणी सभा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी हिन्दी की गैर सरकारी संस्थाएँ आपसी कलह, स्वार्थ और वैमनस्य के कारण अवस्थ हो रही हैं और प्रायः मरणासन्न-सी दशा में पहुँच रही हैं।

हिन्दी के उत्सव के लिए हिन्दी पखवाड़े का बैनर सरकारी दफ्तरों पर प्रतिवर्ष सुशोभित होता है। परम्परावादी देश में सरकारी दफ्तर नियमपूर्वक प्रतियोगिता, भाषण और सम्मान, गायन-वादन और हिन्दी-स्तुति का प्रीतिकर अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं। यत्र-तत्र हिन्दी को लेकर गम्भीर चिंता भी व्यक्त की जाती है और इसके प्रति सर्वप्रथम का सत्संकल्प भी दुहराया जाता है। इन सबके दुश्क्र में हिन्दी जीवी लेखक, अधिकारी और भाषाविद फँसे रहते हैं कुछ बेमन से और कुछ बड़े मनोयोग से। विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ भी इन कार्यक्रमों की व्यवस्था और आयोजन में आए दिन उलझी रहती हैं। नगर राजभाषा कार्य समिति (नराकास) की बैठक होती है और हिन्दी के लिए खानापूरी का काग़ज़ी दौर चलता रहता है। हिन्दी के प्रेमियों, साहित्यकारों और महारथियों को अस्त-व्यस्त रखने में इन सभी का बड़ा योगदान है। यह सब देख सुन कर हिन्दी में अभिरुचि रखने वालों को कुछ-कुछ सुखकर भी लगता है। परंतु तथ्य यही है कि इन सब प्रलोभनों के तुमुल कोलाहल के बीच हिन्दी को लेकर उठने वाले मुख्य प्रश्न प्रायः धरे के धरे ही रह जाते हैं। हिन्दी के रथ का पहिया जहाँ धूसा था वहाँ से निकलने का नाम नहीं ले रहा है। सब कुछ के बावजूद हिन्दी रथ आगे नहीं खिसकता दिख रहा है। कभी 'राष्ट्रभाषा' कही जाने वाली हिन्दी की स्थिति को लेकर असंतोष बना हुआ है। हिन्दी का प्रयोग जहाँ और

जिस रूप में होना चाहिए वैसा अभी नहीं हो पा रहा है। हिंदी को वह प्रतिष्ठा और स्थान नहीं मिल पा रहा है जिसकी वह अधिकारिणी है।

सरकार वचनबद्ध है कि हिंदी परिपक्व होते ही और सबके द्वारा स्वीकृत होते ही पूर्ण राजभाषा का दर्जा पा सकेगी। केंद्र की सरकार ने हिंदी के उद्धार के लिए गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग स्थापित कर रखा है। अनुवाद, प्रशिक्षण और शब्द निर्माण आदि के निमित्त एकांत भाव से समर्पित अनेक सरकारी संस्थान वर्षों से कार्यरत हैं। सरकारी कायालयों में हिंदी अधिकारी नियुक्त हैं। सरकारी तंत्र की तमाम सीमाओं के बावजूद इनके द्वारा महत्वपूर्ण कार्य भी हुआ है। भारत के अनेक विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में हिंदी विभाग हैं। हिंदी का एक बड़ा प्रकाशन व्यापार भी है। हिंदी फ़िल्मों की धूम मची है। हिंदी मीडिया भी ज़बरदस्त है और हिंदी बहुल राजनेता भी हैं। आज हिंदी की भाषा प्रौद्योगिकी भी सुदृढ़ धरातल पर स्थापित है। फिर भी हिंदी हाशिए पर क्यों है? क्यों हिंदी शिक्षा, न्याय, स्वास्थ्य और सरकारी काम काज में प्रभावकारी ढंग से नहीं आ पा रही है? हम क्यों निरुपाय हुए जा रहे हैं? हमारे समक्ष यह यक्ष प्रश्न कि चूंक कहाँ हो रही है गम्भीर विचार की अपेक्षा रखता है। हिंदी के प्रयोग से शिक्षा में सृजनात्मकता, दक्षता, नागरिक जीवन की सुविधा में वृद्धि, न्याय में पारदर्शिता, लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सबलीकरण और जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि सभी जुड़े हैं। संस्कृति और सभ्यता भाषा में ही साँस लेते हैं। उनके संरक्षण और उत्थान के लिए भी हिंदी की अभिवृद्धि ज़रूरी है। शायद मानसिक गुलामी के अवशेष बचे हैं। अतः हिंदी के पक्ष में राजनैतिक - सामाजिक आधार मज़बूत करने के साथ हमें उन दुर्बल क्षेत्रों की ओर भी ध्यान देना होगा जहाँ हिंदी की सामर्थ्य की सम्भावना है। हमें उन भ्रमों को दूर करना होगा जो हिंदी की छवि को धूमिल करते हैं।



हिन्दी की बिंदी में शान

रिखब चन्द राँका 'कल्पेश'

हिन्दी भाषा की बिंदी में शान,
तिरंगे के गौरव गाथा की आन।
राजभाषा का ये पाती सम्मान,
राष्ट्रभाषा से मेरा भारत महान।

संस्कृत के मस्तक पर चमके,
सिंधी, पंजाबी चुनरी में दमके।
बांगला, कोंकणी संग में थिरके,
राजस्थानी चूड़ियों में खनके।

लिपि देवनागरी रखती ध्यान,
स्वर व्यंजन में है इसकी शान।
मात्राओं का हमें कराती ज्ञान,
शब्द भंडार है अनमोल खान।

हिन्दी से राष्ट्र का नव निर्माण,
जन-जन का करती कल्याण।
दुनिया में भारत की पहचान,
हिन्दी से होगा जग का उत्थान।

कबीर, मीरा, तुलसी, रसखान,
सबने गाया हिन्दी का गुणगान।
'रिखब' करता शारदे का ध्यान,
पाता निश्दिन अनुपम वरदान।

उसका क़सूर क्या था?....

मधु अरोड़ा

उस अजन्मे बच्चे का क्या क़सूर था? रमा ऐसा सोच भी कैसे पाई? सोचा तो सोचा, करवा कैसे पाई यह जघन्य हत्या। हत्या ही तो थी उस बच्चे की। किसने कहा था कि यदि बच्चा नहीं चाहिये तो बिना प्रीकॉशन के सेक्स करो।

रमा भी क्या करती? सच कहे तो कोई विश्वास नहीं करेगा। शादी के शुरूआती दिन। अँधियारा घिरते ही जय रमा के आस-पास घूमने लगते। रमा का खाना बनाना दुश्वार हो जाता। कई बार तो उसे एक तरह का अनजाना डर-सा लगने लगता। हर रात वही क्रियाएँ, वही दोहराव। अंततः स्त्राव और ठंडभरी रात को खुद को साफ करना। वैसे कई बार लगता कि वह जय को मना कर दे, 'प्लीज़, आज नहीं। दिल नहीं', पर जय की नाराज़गी का ख्याल आते ही खुद को समर्पित कर देती। वह खुद एक मध्यवर्गीय परिवार की ही तो बेटी थी, तो सपने भी मध्यवर्गीय थे। उसने कभी ऐसे सपने देखे ही नहीं जो पूरे न हो सकें और दिल बेचारा किरच-किरचकर लहूलुहान हो जाये।

जय से परिचय रमा की मित्र ने ही कराया था। उन दिनों रमा के पास पक्की नौकरी नहीं थी और वह ईवनिंग क्लासेस के जरिये अपनी पढ़ाई पूरी कर रही थी। रमा को कभी बॉयफ्रेंड में भी रुचि नहीं रही थी। हमेशा सोचती थी कि कौन इनके साथ समय जाया करे। ये उसकी ज़िन्दगी की प्रमुखता तो है नहीं। फिर भी जय उसके जीवन में प्रवेश कर ही गये। जय से मुलाकातें बढ़ीं। रात को जब रमा का कॉलेज खत्म होता तो जय कॉलेज के दरवाजे पर मिलते और दोनों वहाँ से स्टेशन के लिये रवाना हो जाते। जय भी क्या करते? इस माया नगरी में नितांत अकेले थे। पेइंग गेस्ट हाउस में शाम को जाकर क्या करते? तो ऐसे समय में रमा से मुलाकात मानो डूबते को तिनके का सहारा थी।

रमा को अंदर ही अंदर हौला रहता था कि कॉलोनी के किसी ने उसे रेस्टरॉन्ट में जय के साथ देख लिया तो उसके घर तक बात न पहुँच जाये। पृथकी गोल है। जान-पहचान के लोग कहीं न कहीं टकरा जाते हैं, वैसे शायद कभी न टकरायें पर ऐसे नाजुक समय में ज़रूर मिलेंगे।

अपनी पढ़ाई के आखिरी वर्ष में रमा ने नौकरी छोड़ दी थी ताकि अच्छे नम्बरों से पास हो सके और एक अच्छी नौकरी का सपना देख सके। हाँ, उसने सप्ताह में दो दिन हिंदी के ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया था और बाकी दिन लायब्रेरी में बैठकर अपने नोट्स बनाने का काम। इन्हीं दिनों उसकी जय के साथ नज़दीकियाँ बढ़ने लगी थीं।

एक बार जब वे दोनों ईरानी रेस्टरॉन्ट में चाय और पेस्ट्री खा रहे थे, तब रमा ने अपना मुँह खोला और कहा, 'देखो जय, यह रोज़ शाम का मिलना और चाय पीना कितने दिन चलेगा? यदि इस दोस्ती को स्थायी रूप देने में दिलच़स्पी रखते हो तो हम मिलेंगे, अन्यथा हम अपनी दिशा बदल देंगे।'

रमा की मुखरता पर जय अचंभित रह गये थे। उन्होंने अपने चेहरे पर गम्भीर भाव लाकर कहा, 'अरे, यह क्या कह दिया तुमने? मैंने तो इस रूप में तुमको न देखा और न सोचा। कुछ समय दीजिये।' अचानक वे औपचारिक हो गये। रमा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

उसके बाद एक सप्ताह तक रमा और जय की मुलाकात नहीं हुई। रमा ने इस मामले को खत्म-सा समझ लिया और साथ ही इस हकीकत से रू-ब-रू हो गई कि यथार्थ कितना पथरीला होता है और उसने इसे स्वीकार भी कर लिया था। एक दिन वह लायब्रेरी में बैठी थी कि जय आये और बोले, 'आज क्लासेस बंक कर सकती हैं?'

रमा ने कहा, 'कोई खास वजह?' और अचानक की रमा की आँखों में सपने तिरने लगे थे जिन्हें उसने अपनी आँखों में आने से मना कर दिया था।

जय ने कहा, 'हाँ, मैंने अपने घर में बता दिया है कि मैंने मुंबईया लड़की पसन्द कर ली है और वे तुम्हारी फोटो देखना चाहते हैं। सो फोटो स्टूडियो चलना है।'

रमा शुरू से ही काफी सादगी पसंद है। उसे हर समय कान में, नाक में, हाथ में कुछ पहने रहना बेड़ियों जैसा लगता है। उस दिन भी उसने कान में कुछ नहीं पहना था। जय ने कहा, 'तुम्हारी फोटो तुम्हें पसंद करने के लिये भेजी जा रही है। आज तो कान में कुछ पहन लो।' रमा ने फुटपाथ से ही काले रंग के मोती खरीदकर कान में पहन लिये थे।

अंततः फोटो खिंचवाये गये और जय के परिवार को भेज दिये गये। रमा जन्मजात सुन्दर तो थी ही। सो उन लोगों को पसन्द आना ही था और इस तरह दो दोस्त परिवारों की रजामंदी से विवाह के बंधन में बँध गये थे। रमा ने अपनी सुंदरता और पाक कला से सभी को अपने वश में कर लिया था।

ससुराल में कुछ दिन रहकर रमा और जय वापिस अपने शहर आ गये, नौकरी जो थी। जय की कंपनी ने बड़ी मुश्किल से बैचलर फ्लैट दिया था, वह भी बड़ी मेहरबानी से। हाँ, बस, इस कमरे में एक ही फायदा था कि सुसज्जित था। पूरा फर्नीचर था जो एक जोड़े के लिये ठीक ही था। मुंबई जैसे शहर में यह भी कहाँ नसीब होता है। सब रमा के भाग्य को सराह रहे थे।

ससुराल में रमा ने देख लिया था कि वे भी मध्यवर्ग से ही ताल्लुक रखते थे। जय की नौकरी अच्छी जगह थी तो उनका थोड़ा दबदबा था परिवार में। यह तो बाद में पता चला कि दुहनी गाय की तो लातें सभी सहते हैं। रमा ने अपने पुराने ऑफिस में फिर से नौकरी के लिये आवेदन कर दिया था, यह सोचकर कि कुछ न होने से कुछ अच्छा। वह नौकरी उसे मिल भी गई।

दिन ठीक-ठाक गुजर रहे थे। हालत तो यह थी कि प्रेम विवाह हुआ था तो दहेज का लेन देन न होना पहली शर्त थी। रमा नहीं चाहती थी कि वह औरों के दम पर गृहस्थी बसाये। रमा और जय अक्सर रात का खाना बाहर खाते थे। बाहर का खाते-खाते दोनों बोर होने लगे थे। फिर भी बाहर खाने का सिलसिला क्रीब एक साल चला। घर-गृहस्थी का सामान जुटाने में समय तो लगना ही था। इसी बीच रमा को अपने शरीर में कुछ बदलाव महसूस होने लगा। मसलन, समय-बेसमय उल्टियाँ होना, देर रात कुल्फी खाने का दिल करना। उसे लगा कि यह क्या हो गया? रमा को बड़ी हिचक हो रही थी कि कैसे जय को बताये। शादी इतनी पुरानी तो नहीं हुई थी कि वह जय के साथ पूरी तरह अनौपचारिक हो जाये।

जब रमा की तबियत थोड़ी गिरी-गिरी रहने लगी और रात को जय के साथ लेटने के लिये मना करने लगी, तो जय ने एक दिन पूछा - 'क्या बात है रमा, मुझसे इतनी अलग क्यों रहती हो, साथ लेटने से भी कतराती हो, क्या बात है?' तब जाकर रमा ने सकुचाते हुए जय को अपने अन्दर होनेवाले परिवर्तन के विषय में बताया था। सुनकर जय एक पल को चुप रहे और फिर बोले, 'इतनी जल्दी मेरा प्यार बाँटनेवाला आ जायेगा तो मेरा क्या होगा?'

रमा को जय की यह बात समझ में नहीं आई। कुछ समय बाद जय ने कहा, 'इतनी जल्दी प्रेग्नेंट नहीं होना चाहिये था। अभी घर के हालात तो देख रही हो। चलो, फिर भी डॉक्टर को दिखा दो। कन्फर्म हो गया तो सोचेंगे कि क्या करना है।'

जय की ठंडी आवाज़ और बच्चे के प्रति रुखा रवैया देखकर परेशान हो गई। सच कहे तो वह भीतर से डर गई थी कि कहीं.....। इसके बाद उसने अपनी आँखें बंद कर लीं थीं। दिमाग़ सुन्न सा हो गया था। कभी कमज़ोरी महसूस न करनेवाली रमा अचानक खुद को कमज़ोर महसूस करने लगी थी।

दूसरे दिन वह सुबह डॉक्टर के यहाँ गई। डॉक्टर ने नब्ज देखी, आँखें चेक कीं और कहा, 'कल खून चेक करवा लो और पेशाब टेस्ट के लिये दे जाओ। दो दिन बाद रिपोर्ट मिलेगी।

रात को जय ने पूछा, 'डॉक्टर के यहाँ गई थीं? क्या कहा डॉक्टर ने?'

रमा ने कहा, 'इतनी जल्दी कैसे बतायेगी? कल खून चेक करेगी और पहला पेशाब भी माँगा है। कल जाऊँगी।' इसके बाद कुछ कहना सुनना बाकी नहीं रह गया था। दोनों करवट बदलकर लेट गये। जय को लगा कि आज रमा को छेड़ना ठीक नहीं। उसका मूड ठीक नहीं है।

रमा दूसरे दिन सुबह नौ बजे बिना कुछ खाये पिये अस्पताल गई। साथ ही सुबह का पहला पेशाब शीशी में भरकर ले गई। दे दिया। जब डॉक्टर ने रमा के हाथ की नस में इंजेक्शन की सुई घुसाकर खून लिया था, वह बिलबिलाकर रह गई थी। पहली बार दिया था खून।

उसे रह-रहकर उल्टियाँ हो रही थीं। जय उसकी उल्टियों की आवाज से रात को परेशान हो जाते। रमा को लगता कि शायद जय मानसिक रूप से पिता बनने के लिये तैयार नहीं थे। इसका कारण क्या हो सकता है? शादी हुई तो यह काम भी तो होना ही है, ये इतने चिड़चिड़े से क्यों हो रहे हैं, जबकि रिपोर्ट आना तो बाकी है।

दो दिन बाद वह डॉक्टर के यहाँ गई। डॉक्टर तो मिली नहीं पर काउन्टर से ही रिपोर्ट मिल गई। उन रिपोर्टों में सब मेडिकल टर्म्स लिखे थे जो उसकी समझ से बाहर थे। काउन्टर गर्ल से पता करना चाहा तो वह बोली, 'हमको कुछ बताने का ऑर्डर नहीं है। डॉक्टर मैडम शाम को आयेंगी, तभी आईये।'

वह शाम को फिर गई और डॉक्टर को रिपोर्ट दिखाई। डॉक्टर ने सब पेपर देखे और बोलीं, 'रमा, आपकी सब रिपोर्ट्स पॉजिटिव हैं, याने आप गर्भवती हैं।'

सच कहा जाये तो रमा को अन्दर से कोई खास खुशी नहीं हुई थी। उसकी आँखों के सामने जय का गंभीर चेहरा आ गया। वह डॉक्टर का धन्यवाद करके घर आ गई।

शाम को जय घर आये तो रमा ने चाय दी। चाय पीते-पीते जय ने पूछा, 'रिपोर्ट क्या कह रही है?'

जब रमा ने बताया कि वह गर्भवती हो चुकी है तो जय क्षणिक खुश तो हुए पर चेहरे पर वह चमक नहीं दिखी जो पितृत्व प्राप्त करने की खबर पर दिखनी चाहिये।

रमा ने कहा, 'तुम्हें खुशी नहीं हुई यह खबर सुनकर?'

जय ने कहा, 'ऐसी बात नहीं है, पर तुम तो जानती हो, मेरा परिवार बड़ा है और मेरे पास अच्छी नौकरी है तो मुझ पर ज़िम्मेदारी भी ज़्यादा हैं। यदि बच्चा आ गया तो फिर मैं परिवार की मदद नहीं कर पाऊँगा।'

रमा एक मिनट के लिये सक्रते में आ गई पर फिर खुद को सँभालते हुए कहा, 'तुम क्या चाहते हो मुझसे?'

जय ने कहा, 'अपने परिवार से तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर तुमसे तो कह सकता हूँ।' जय को गोल-गोल बातें करते देखकर रमा को गुस्सा आ गया। उसने कहा, 'खुलकर कहो न। पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो?'

'ऐसा है रमा, अभी तो तुम्हें ज़्यादा दिन नहीं चढ़े हैं। क्यों न तुम यह गर्भ गिरवा दो। मैं फिलहाल यह नई ज़िम्मेदारी लेने के लिये तैयार नहीं हूँ। तुम्हारी नौकरी भी पक्की नहीं है। कभी भी हाथ से जा सकती है। घर के नाम पर एक कमरा ही है। वैसे यह मेरा सुझाव है, मानो न मानो तुम्हारी मर्जी।'

कितनी होशियारी से जय ने गेंद रमा के पाले में डाल दी थी। सभी मर्द ऐसे ही होते हैं? उसे अपना चचेरा भाई याद आ गया जो अपनी पत्नी को ऐसे ही लचर कारण देकर तीन गर्भपात करवाता रहा और अंततः डॉक्टर ने कह दिया था कि उसकी पत्नी कभी माँ नहीं बन सकती। गर्भाशय की दीवारें खुरदरी हो गई हैं। गर्भ टिकेगा नहीं।'

रमा ने कहा, 'मुझे सोचने का मौका दो।' उस दिन से वह पूरे हफ्ते सो नहीं पाई थी। शादी से पहले जय ने क्यों नहीं बताया था कि उनका परिवार उनकी प्रमुखता में रहेगा। इस भावी बच्चे का क्या क्सूर है? क्या वह करे और क्या न करे, बस इसी के बीच पेंडुलम की तरह इधर से उधर होती रहती।

उधर जय इस इंतजार में थे कि देखें, ऊँट किस करवट बैठता है। रमा ऑफिस जाती रही और अब तो उसे नौकरी करना और ज्यादा ज़रूरी लगने लगा था। उसे लगने लगा था कि यदि परिवार की ज़रूरतों का वास्ता देकर घर खर्च देना कम कर दिया तो? जय से बात भी करना था।

जब रात को दोनों सोने लेटे तो रमा ने ही शुरूआत की, 'देखो जय, तुम्हें इतना आसान लगता है गर्भ गिरवाना? हम दोनों के प्यार का पहला सबूत पल रहा है। तुम ऐसा कैसे सोच सकते हो? तुम भी इतने भाई-बहन हो। तुम्हारी माँ ने तो नहीं गिरवाये गर्भ, फिर तुम यह बात कैसे सोच सकते हो?'

जय ने कोई उत्तर नहीं दिया। दोनों के बीच पसरी चुप्पी माहौल को भारी बना रही थी।

'जय, बोलो न! चुप्पी साधने से काम कैसे चलेगा? जो भी तुम्हारे मन में है, कह डालो।'

जय ने मुँह खोला और बोले, 'सच कहूँ?'

'हाँ, सच ही कहो। ज्यादा दिन चढ़ गये तो मैं कुछ नहीं कर पाऊँगी।'

अब जाकर जय खुले, 'रमा, मुझे अन्यथा मत लेना, पर तुम इस बच्चे को जन्म मत दो। मेरी हालत समझो। मैं अभी यह ज़िम्मेदारी लेने और सँभालने में समर्थ नहीं हूँ।' यह कहते समय जय रुँआसे-से हो गये थे। रमा ने कुछ नहीं कहा। उसे एक उबकाई आई और वह भागकर बाथरूम चली गई।

अब दोनों के बीच कुछ भी कहने-सुनने को नहीं रह गया था। एक वाक्य में जय अपनी बात कह चुके थे। निर्णय तो रमा को लेना था, बच्चा तो उसके पेट में पलना था। वह क्या करे और क्या न करे, कुछ भी तो समझ में नहीं आ रहा था। पेट में रह-रहकर गोले उठ रहे थे। वह अपने पेट को हल्के से दबाकर उन गोलों को उठने से रोकने का यत्न कर रही थी। अचानक उसने अपनी आँखों को नम महसूस किया। अँधेरे में उसके आँसू कौन देखता और कौन पोंछता? कोरों में आये पानी को उसने हथेलियों में ले लिया और आँखें बन्द कर लीं।

सुबह जय शायद जल्दी उठ गये थे। अचानक उसने सुना, 'रमा, आज काम पर नहीं जाना क्या? सुबह के आठ बज गये हैं। मैंने चाय बना ली है। तुम जल्दी से तैयार हो जाओ।'

रमा ने कहा, 'आज मैं काम पर नहीं जा रही। ठीक नहीं लग रहा। आज आराम करूँगी। हाँ, चाय दे जाओ और हाँ, ब्रेड बटर खाकर चले जाना।'

रमा की ठंडी आवाज़ सुनकर जय कुछ मिनटों के लिये हिल ज़रूर गये थे, पर चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया और रमा को चाय बिस्किट देकर नहाने चले गये। रमा चाय पीकर फिर सो गई। रात उसे ठीक से नींद नहीं आई थी। जय भी बिना कोई बात किये तैयार होकर काम पर चले गये।

क़रीब दोपहर के बारह बजे रमा उठी। शरीर भारी लग रहा था। अनमने मन से उठी और अपने लिये आलू की ज्यादा तेल और मसालेवाली सूखी सब्ज़ी बनाई। ब्रेड के चार पीस लिये। अपने लिये नहीं पर अन्दर पलनेवाले बच्चे के लिये तो पेट में कुछ डालना था। उसने यह मिनी लंच खाया और फिर नहाने चली गई।

अब निर्णय तो उसे लेना ही था। जय अपनी बात कम शब्दों में कह चुके थे। घड़ी देखी। शाम के चार बजे थे। उसने अपनी डॉक्टर को फोन किया, 'हैलो, डॉक्टर, मैं आज शाम को आ सकती हूँ? आपसे कुछ ज़रूरी बात करना है।' उधर से आवाज़ आई, 'हाँ, आ जाओ। अब तो तुमको आना होगा, छः बजे आ जाओ।'

शाम को छः बजे रमा डॉक्टर के यहाँ गई। डॉक्टर ने उसका चेकअप किया और फिर पूरा टाईम टेबल बना डाला, 'देखो रमा, गर्भ धारण करने के बाद हर महीने ये-ये परीक्षण करवाने होंगे। हर परीक्षण की फीस अलग-अलग होगी।' रमा चुपचाप सुनती रही।

सब सुनने के बाद रमा ने कहा, 'डॉक्टर, आपका आभार सब बताने के लिये। लेकिन मुझे अभी यह बच्चा नहीं चाहिये।'

रमा की आवाज़ सुनकर डॉक्टर को आश्चर्य हुआ पर उन्होंने अपनी सामान्य आवाज़ में पूछा, 'यह आप क्या कह रही हैं? यदि अन्यथा न लें तो कारण जान सकती हूँ?' डॉक्टर ने नरमाई से पूछा।

रमा ने कहा, 'वैसे तो बताना नहीं चाह रही थी। पर डॉक्टर से और दाई से क्या बात और क्या पेट छिपाना। आपको एक बादा करना होगा।'

डॉक्टर बोलीं, 'आप निश्चिंत रहिये रमा, यह बात यहीं ख़त्म हो जायेगी। पर आप बताईये तो सही।'

रमा ने अपने दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरे में बन्द करते हुए होठों को तर किया। डॉक्टर देख रही थीं कि रमा के होठ खुलते और फिर बन्द हो जाते। वह बार-बार जीभ से होठ गीले कर रही थी। डॉक्टर चुपचाप बैठी थीं और इंतज़ार कर रही थीं। आखिरकार रमा के होठ हिले और बोली, 'दरअसल डॉक्टर, मैं अभी मानसिक रूप से माँ बनने के लिये तैयार नहीं हूँ। अजीब-सा डर है मन में। मैंने तो सोचा भी नहीं था कि यह सब इतनी जल्दी हो जायेगा।'

इस पर डॉक्टर ने कहा, 'यदि बच्चा नहीं चाहिये था तो प्रीकॉॅशन लेना चाहिये था।'

इस पर रमा ने ज़िङ्गकते हुए कहा, 'लिया था, पर न जाने कब ऐसा हो गया।'

डॉक्टर ने सिर्फ हुंकारा भरा और कहा, 'सिर्फ यही कारण नहीं हो सकता बच्चा न चाहने का।'

रमा ने आगे बात बढ़ाई, 'हमारे पास एक ही कमरा है, उससे भी बड़ी बात कि मेरी नौकरी पक्की नहीं है। मैं नहीं चाहती कि अभी से बच्चे को कमियों के बीच रहना पड़े और उसे ज़िन्दगी भर छोटी-छोटी इच्छाएँ मारनी पड़ें।'

डॉक्टर ने रमा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'माना कि तुम्हारा कहना सही हो पर तुम्हें अजन्मे बच्चे के प्रति इतनी क्रूरता से नहीं सोचना चाहिये। वह अपनी तकदीर लेकर आयेगा।'

यहीं पर रमा चिढ़ गई और बोली, 'लेकर आयेगी भी तो हो सकता है। डॉक्टर होकर भी आपके मन में लड़का ही आया न?'

डॉक्टर रमा के इस आक्रामक तेवर से ग़ड़ब़ड़ा गई और बोली, 'आई एम सॉरी रमा, मेरा यह मतलब करतई नहीं था।'

रमा ने खुद को संयत किया और कहा, 'इट इज ओ.के. लेकिन यह तय है कि मुझे यह बच्चा नहीं चाहिये।' डॉक्टर हैरान थी रमा की ज़िद देखकर। प्लीज़, डॉक्टर, यह मामला यहीं ख़त्म कर दीजिये।'

'ठीक है रमा, जब आपका यही निर्णय है तो फिर मैं क्या कर सकती हूँ। परन्तु एक बात बताईये कि क्या आपके पति को आपके इस निर्णय की जानकारी है? कहीं ऐसा न हो कि मेरे लेने के देने पड़ जायें। पेपर पर उनके हस्ताक्षर भी चाहिये होंगे।'

रमा ने निश्चिन्त होते हुए कहा, 'जी, उसकी आप चिंता न करें। मैंने अपने पति से बात कर ली है।'

डॉक्टर ने हैरान होते हुए कहा, 'वे मान गये आपकी बात?'

'यह मैं नहीं जानती पर उन्होंने ऐसा कोई आग्रह भी नहीं किया जिससे ऐसा लगे कि वे बच्चा चाहते हैं।' रमा के यह कहने पर डॉक्टर कंधे उचकाकर रह गई।

रमा ने आगे कहा, 'मैं नहीं जानती पर यह महसूस कर पा रही हूँ कि उन पर अपने भाई-बहनों की बहुत ज़िम्मेदारी है और उन पर इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का अतिरिक्त दबाव है। मैं नहीं चाहती कि इतनी जल्दी बच्चे की भी ज़िम्मेदारी आ जाये। सच तो यह है कि वे भी अभी बच्चा नहीं चाहते।'

डॉक्टर ने कहा, 'मैं आपकी भावनाओं का सम्मान करती हूँ लेकिन साथ ही इस बात की ताकीद भी करती हूँ कि पहले बच्चे का गर्भपात करने के बाद यह भी हो सकता है कि आप कभी माँ न बन पायें। यह सच भी आपको जान लेना होगा। फिर भी निर्णय आपका है।'

'ठीक है डॉक्टर, मैं कोई पाँच महीने के बच्चे का तो गर्भपात करवा नहीं रही कि उसमें जान पड़ गई हो, उल्टे अभी तो डेढ़ महीने का ही गर्भ है। बच्चे में जान नहीं पड़ी है। इसीलिये अभी ही यह मामला ख़त्म कर देना चाहती हूँ।'

डॉक्टर समझ गई कि रमा को समझाना आसान काम नहीं है। एक तरह से वह जो सोच रही है, वह कदाचित् ठीक भी है।

रमा कहने को तो कह गई पर कहीं अन्दर तक सिहर गई थी। उसे अचानक अपने अन्दर पलते बच्चे से बात करने का दिल करने लगा। उसने अपने पेट पर हाथ फेरा। अभी तो पेट सपाट ही है। इतने में उसे ज़ोर की उबकाई आई और वह सुँह पर हाथ रखे वॉशरूम की ओर भागी। वॉशरूम से बाहर आकर रमा ने डॉक्टर से पूछा, 'तो फिर कब आऊँ?'

डॉक्टर ने कहा, 'जब आपने तय ही कर लिया है तो आप कल सुबह आठ बजे कुछ खाये-पिये बिना आ जायें... और हाँ, अपने पति को साथ लायें, पेपर साइन करने होंगे।'

रमा डॉक्टर का आभार व्यक्त करके घर वापिस आ गई। घर आकर वह निढाल होकर बिस्तर पर लेट गई। समय काटे नहीं कट रहा था। उसे लग रहा था कि कल कभी आये ही नहीं। अचानक उसके कानों में बच्चे के रोने की आवाज़ गूँजने लगती। वह अपने पेट की ओर देखती कि कहीं पेट ऊपर-नीचे तो नहीं हो रहा बच्चे के रोने से। फिर उसे याद आया कि अभी तो डेढ़ महीना ही हुआ है, बच्चे में जान कहाँ पड़ी होगी।

रात को जय जब घर आये तो बोले, 'चलो, आज बाहर खा लेते हैं। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है।'

रमा को लगा कि जैसे बकरे को हलाल करने से पहले खिलाया-पिलाया जा रहा है। उसने सिर हिलाकर मना कर दिया।

जय ने रमा के पास आकर कहा, 'चलो भी सही। डॉक्टर ने क्या कहा?'

इस पर रमा ने कहा, 'डॉक्टर को क्या कहना था? मैंने कल की तारीख ले ली है गर्भपात करवाने की। तुम्हें भी चलना होगा। पेपर साइन करने होंगे।'

जय ने कहा, 'कितने बजे चलना होगा?'

'साढ़े सात बजे डॉक्टर ने आने के लिये कहा है। आठ बजे ऑपरेशन है।'

जय ने कहा, 'ठीक है। सुबह देर से ऑफिस चला जाऊँगा।'

इस तरह अब तो तय हो गया कि गर्भपात करवाना ही है। रमा ने सोचा कि एक बार तो जय कहते, भले ही झूठ को ही कि वह बच्चा न गिराये। घर को खिलखिलाहटों की ज़रूरत है। उसकी आँखों से मानो नींद ही उड़ गई है। रात करीब तीन बजे उसे नींद आई।

सात बजे जय ने उठाया। वह हड्डाकर उठी। सिर्फ़ आधा घंटा बाकी था। खाना तो था नहीं कुछ। जल्दी से नहाने चली गई। उसने ढीली सी फ्रॉकनुमा मिडी पहनी और बालों को हल्के से जूँड़े का शेप दिया और अपने पर्स में करीब दस हज़ार नकद लेकर चप्पल पहनकर दरवाज़ा बन्द करके सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आ गई।

वे दोनों पौने आठ बजे अस्पताल में थे। दस मिनट बाद नर्स आई और बोली, 'रमाजी आप ही हैं?' रमा ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी तो नर्स ने कहा, 'आप ऑपरेशन थियेटर की ओर चलो। सब सफाई करने का है और कपड़ा भी बदलने का है। आपका हज़बैण्ड?' रमा ने आँख से जय की ओर इशारा कर दिया।

नर्स ने कहा, 'साहब, आप ऑफिस में आओ। पेपर साइन करने का है आपको।'

जय ने रमा के सिर पर हाथ केरा और रमा उन ऊँगलियों का कम्पन अपने सिर पर महसूस कर रही थी। उसने धीरे से जय का हाथ दबा दिया। दोनों निःशब्द थे। वे दोनों ही यह काम आर्थिक मज़बूरी में करवाने के लिये सहमत हुए थे, बोलते भी तो क्या?

रमा मरीनिवत् अस्पताल के ऑपरेशन थियेटर की ओर बढ़ चली। उसने अन्दर जाकर देखा तो अन्दर से डर सी गई। एक बार फिर पेट को सहलाया। ऑपरेशन थियेटर में तरह-तरह के औजार, हरे एप्रन पहने नर्सें और वॉर्ड बॉय। सब ऐसे तैयारी कर रहे थे मानो बकरे को काटने की तैयारी कर रहे हों। सपाट चेहरे, जिन पर कोई भाव नहीं।

उसने महसूस किया कि कोई उसके पास आकर खड़ा हो गया है। आखें खोलीं तो पाया कि एक डॉक्टर इंजेक्शन लिये उसके सिरहाने खड़ा है। उसने पूछा, 'आप क्या करनेवाले हैं?

डॉक्टर ने कहा, 'मैडम, आपको एनेस्थिशिया दिया जायेगा।'

रमा उठकर बैठ गई और पूछा, 'उससे क्या होगा?'

डॉक्टर ने कहा, 'उसने की ज़रूरत नहीं है। उससे आपका कमर से नीचे का हिस्सा निष्क्रिय कर दिया जायेगा। गर्भाशय की सफाई के समय दर्द नहीं होगा।'

'एक मिनट रुकिये। ज़रा डॉक्टर को बुलाईये।' इतने में डॉक्टर आ गई और बोली, 'आप लेटी रहिये रमाजी, डॉक्टर को अपना काम करने दीजिये।'

रमा ने कहा, 'मैं एनेस्थिशिया नहीं लूँगी। आप अपना काम शुरू कीजिये। मैं महसूस करना चाहती हूँ।'

डॉक्टर अकबका गई, 'आप ठीक तो हैं रमाजी? आप जो करवा रही हैं, वह काम करना कोई हँसी-खेल नहीं है। बहुत दर्द होता है। आप सह नहीं पायेंगी और आप चीखेंगी, चिल्लायेंगी तो हम अपना काम नहीं कर पायेंगी।'

'डॉक्टर, आप चिंता न करें। मैं उफ भी नहीं करूँगी। हिलूँगी भी नहीं। पर मुझे इंजेक्शन मत लगाईये। मैं बेहोश नहीं होना चाहती। आप अपना काम कीजिये। जितनी जल्दी आप यह काम कर देंगी, मेरे पेट में कुछ अन्न जायेगा। पानी तक नहीं पिया है।'

डॉक्टर के चेहरे पर आई झुँझलाहट को रमा साफ देख और महसूस कर रही है। रमा ने कहा, 'आप सोचिये डॉक्टर, मैं जिस बच्चे को ख़त्म करवा रही हूँ, उसकी पीड़ा, उसके दर्द को महसूसने का क्या मुझे हक्क नहीं है? उस बच्चे का तो कोई क़सूर नहीं है, मैं जो करवा रही हूँ, उसका दर्द मुझे महसूसना ही होगा।'

डॉक्टर ने कुछ न कहकर एक बार फिर रमा का ब्लडप्रेशर मापा। नॉर्मल निकला। डॉक्टर ने कहा, 'ग़ज़ब का जीवट है आपका। पर एक बात बता दूँ कि एक फॉर्म आपको साइन करना होगा कि यह काम आप अपनी मर्जी से करवा रही हैं। हम अपने सिर कोई आफत मोल नहीं लेना चाहते।'

रमा को नर्स ने एक छपा फॉर्म पकड़ा दिया। रमा ने वह फॉर्म साइन कर दिया और निश्चेष्ट होकर लेट गई। डॉक्टर ने हरे रंग का एप्रन पहन लिया। मुँह पर मास्क लगा लिया। नर्स ऑपरेशन के औजार हाथ में लेकर खड़ी हो गई।

रमा ने टेबल के ऊपरवाले शीशे से देखा कि डॉक्टर ने एक सिरिंज ले ली है जिसके पॉइंट पर एक धारदार लम्बा-सा औजार लगा है। रमा ने भय के मारे आँखें बंद कर लीं। डॉक्टर ने उस सिरिंज को योनि से अंदर प्रविष्ट कर दिया और मशीन आँन कर दी।

गर्भाशय के अन्दर सुईयाँ-सी चुभने लगीं। रमा साफ सुन पा रही थी कि गर्भाशय की दीवारें मानो खुरची जा रही थीं। रह-रहकर सुई सी चुभती और जैसे पपड़ी सी उधड़ने लगती। खूब दर्द हो रहा था। रमा दाँत भींचकर लेटी थी। लग रहा था कि कलेजा निकलकर मुँह को आ जायेगा। उसे लग रहा था मानो अंदर बच्चा

सिसक रहा है। औजार की चुभन के साथ वे सिसकियाँ बढ़ती जा रही थीं। रमा को लग रहा था मानो उसके दिमाग की नसें फट जायेंगी। वह खुद को तसल्ली-सा देती और बुडबुडा उठती, 'बच्चे, तुम निर्जीव हो, अभी तुम्हारी साँसें चलना शुरू नहीं हुई हैं। मुझे कमज़ोर मत करो।'

डॉक्टर के अभ्यस्त हाथ अपना काम कर रहे थे। रमा को अनुभव हो रहा था कि उसके शरीर के बननेवाले हिस्से को उसने ज़बर्दस्ती खत्म करके अच्छा नहीं किया। वह अजन्मा तड़पा होगा। उसे अजीब-सी गिल्ट होने लगी। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। वह टेबल के शीशे से साफ देख पा रही थी।

डॉक्टर एक ट्रे में खून से सने पैड्स रखती जा रही थी। खून से सने हुए डॉक्टर के दस्ताने देखकर रमा को मतली-सी होने लगी। यह क्या कर दिया उसने। अपने बच्चे को ही मरवा दिया उसने। डॉक्टर तो मना कर रही थीं। उसकी ही ज़िद थी। वह अचानक अपराध भावना से भर गई।

उसके पेट में टीसता हुआ दर्द उठता और वह तड़पकर रह जाती। अपने पूरे होशो-हवास में उसने यह काम करवाया था। करीब बीस मिनट बाद डॉक्टर ने अपना मास्क उतारा और रमा से पूछा, 'आपको डर नहीं लगा?'

रमा ने कहा, 'डर तो बहुत लगा पर क्या करती? निर्णय तो मेरा अपना था। किसको दोष देती?'

रमा, मैं तो मन ही मन डर रही थी कि यदि आप हिलीं तो मेरा हाथ हिलेगा और अंदर सिरिंज गलत जगह न धूम जाये। लेने के देने पड़ जाते। यह तो अच्छा था कि आपका गर्भ मात्र छः हफ्तों का था, इसलिये आराम से साफ हो गया। तुमने सहयोग किया इसलिये ठीक से हो गया। ब्लडप्रेशर भी नॉर्मल था।'

रमा ने डॉक्टर का हाथ पकड़कर कहा, 'डॉक्टर, एकाध साल में मैं फिर से गर्भ धारण कर सकूँगी न?'

डॉक्टर ने अपने हाथ साफ करते हुए कहा, 'होपफुली। मैंने तो पहले ही इस आशंका से अवगत करा दिया था।' यह कहकर उसने रमा का हाथ हौले से दबा दिया और साथ ही कहा, 'सब ठीक हो जायेगा। चिंता न करें।'

रमा धीरे-धीरे ऑपरेशन टेबल से उठी और खून से सने पैड्स को देखकर बोली, 'मेरे अनाम फरिश्ते! मुझे माफ कर देना। तेरे भले के लिये ही तुझे इस ज़मीन पर नहीं आने दिया। हम तुझे कमियों में नहीं पालना चाहते थे। तुझे जीवन की वे सभी खुशियाँ देना चाहते थे जिनका तू हकदार है पर अभी नहीं दे सकते थे।...तू ही बता मेरे लाल, मुझे क्या हक्क था कि तुझे जन्मकर तुझे घुटते देखती। ना, मैं यह जघन्य पाप नहीं कर सकती थी। इसलिये तुझे रोक दिया।'

डॉक्टर ने नर्स को इशारा किया। नर्स उसे बाहर ले गई और एक बेड पर लिटा दिया। उसे थोड़ा पानी दिया गया। अंदर ही अंदर खूब दर्द हो रहा था। उसने पानी पीकर आँखें बंद कर लीं। उसे कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला। शाम के छः बजे उसकी नींद खुली। घंटी बजाई। नर्स आई। रमा ने पूछा, 'चाय मिल सकेगी सिस्टर और साथ ही कुछ खाने के लिये।'

सिस्टर ने अपनी व्यावसायिक मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा, 'हाँ, डॉक्टर ने इडली और चाय देने को बोला है।'

कुछ ही देर में नर्स नाश्ता ले आई। रमा ने खाया और उसे अपने अन्दर ताक्त-सी महसूस हुई। इतने में डॉक्टर आई और रमा का कंधा थपथपाकर बोली, 'ब्रेव लेडी। सब काम ठीक से हो गया। पर यह काम बार-बार मत करवाना। गर्भाशय क्रमज़ोर पड़ जाता है और फिर प्रेगनेंट होने के चांस बहुत कम हो जाते हैं।'

रमा ने डॉक्टर से कहा, 'नहीं अब बिल्कुल दुबारा ऐसा नहीं होगा। आपको क्या लगता है कि मुझे अच्छा लगा यह सब करके? हर बार चुभती सुई के साथ खून के आँसू रोई हूँ डॉक्टर। पर सच कहती हूँ कि अभी के हालात मुझे इस अजन्मी जान को जनमने की इजाज़त नहीं दे रहे थे।'

इतने में जय अन्दर आ गये और उन्होंने रमा को गले से लगा लिया। रमा एक बार फ़ूट-फ़ूटकर रो पड़ी। भरनेवाली गोद को खाली करवाकर खुद को लुटा-सा महसूस कर रही थी।

ऐ मेरी कलम

शिव चौहान 'शिव'

ऐ मेरी कलम तू क्रांति लिख
धरा की शोणीत माटी लिख
वीरों की आन-बान-शान लिख
विप्लव गान लिख
शौर्य का गुणगान लिख
हिन्द की शक्ति/पहचान लिख
कुछ नहीं तू बस इतना लिख
दे गये अपनी जाने-वतन
उनकी कुर्बानी लिख
ज़िन्दगानी की अमर कहानी लिख
वेवाओं के माथे का सिंदूर/अंगार लिख
बहनों की राखी का ढोर लिख
माँ के दूध का कर्ज़ लिख
बाप के अरमाँ/फर्ज़ लिख
बेटी का रुदन/पुकार लिख
बेटे के अश्रु की धार लिख
भाई का मनोबल लिख
परिवार का सम्बल लिख
पुष्प की अभिलाषा लिख
शहीदों की परिभाषा लिख
ऐ मेरी कलम तू क्रांति लिख...

सर्वकालिक कृष्ण

सुशील शर्मा

भारत के मथुरा में ३२२८ ईसा पूर्व में, एक बच्चा पैदा हुआ था कृष्ण, जिसे मानव जाति के अध्यात्मिक और लौकिक भाग्य को दोबारा बदलने के लिए नियत किया गया था। अपने १२५ वर्षों के जीवन में, श्री कृष्ण ने मानव जाति की सामूहिक चेतना पर भरोसा किया - भक्ति और धर्म के साथ-साथ परम वास्तविकता के बारे में दुनिया को फिर से शिक्षित किया।

आज भी कृष्ण अपनी प्रासंगिकता को पूर्ण प्रभाव में बरकरार रखने में सक्षम हैं। गीता भगवान कृष्ण का दिव्य गीत है और इसे एक ऐसी किताब के रूप में माना जा सकता है जिस पर सभी भक्त निर्भर करते हैं, शास्त्र के रूप में सर्वोच्च ज्ञान।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युथानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।

परित्राणाय साधुनाम विनाशाय चः दुष्कृताम्, धर्मं संस्थापनार्थाय सम्भावामी युगे युगे॥"

यह क्षोक सदा उद्घृत किया जाता है क्योंकि कृष्ण धर्म के सुदृढ़ीकरण के लिये अवतरित हुए थे, न कि किसी पंथ की प्राण-प्रतिष्ठा के लिये। धर्म जो सनातन है, धर्म जो जनोन्मुखी है, जनोत्कर्षी होता है। पंथों को आप एक ज़मात मान सकते हैं जो समकालीन एवं स्थानीय परिस्थिति सृजित होते हैं। आप ईश्वर के साकार स्वरूप पर विश्वास करें न करें पर एक चिंतन अवश्य कीजिये जो जनोन्मुखी है, जो सदाचारी है, जो सर्वग्य है, जो व्यष्टि से समष्टि की ओर जाने के लिये हमें सहयोग करता है वो ईश्वर है....श्रीकृष्ण में यही सब तो विद्यमान है। कृष्ण क्या हैं आज तक कोई नहीं बता सका। आप उन्हें पुकारने की स्वतंत्रता ले सकते हैं और एक ही समय में आप उन्हें एक शरारती बच्चा, एक भाई, एक सारथी, एक योद्धा, एक शिष्य, एक गुरु, एक गौपालक, एक दूत, गोपियों के प्यारे....पंथ-प्रवर्तक, आदर्श प्रेमी, एक दैवीय नायक या सर्वोच्च व्यक्ति बुला सकते हैं। अपने पूरे जीवन में, कृष्ण ने इतनी सारी भूमिकाएँ निभाई - लेकिन पूरे समय कभी नहीं भूलते कि वे बस सिर्फ कृष्ण हैं। उनकी भूमिकाएँ और उनकी असली प्रकृति शाश्वत, आनंदमय चेतना थी। एक ईश्वरीय व्यक्तित्व, जो खुद को एक नेता, नायक, संरक्षक, दार्शनिक, शिक्षक और मित्र के रूप में बदल देता है। भगवान राम आदर्श पुत्र, आदर्श पति है; आदर्श राजा और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। इसके विपरीत, भगवान कृष्ण एक खुश-भाग्यशाली भगवान हैं जिनके जीवन के रंगीन अनुभव हमें सिखाते हैं कि जीवन के कठिन चौराहे पर क्या करना है।

आज दुनिया दुःख के सागर में डूब गई है और इससे बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही है। आज मनुष्य विभिन्न सांसारिक वस्तुओं की तलाश करने में लगा है जो खुशी दे सकती हैं। आज सांसारिक वस्तु की इच्छा केवल भोजन और आश्रय तक सीमित नहीं है, बल्कि मन अधिक सनसनीखेज खुशी के लिए प्रयासरत रहता है। आज मानवता की समस्या सिर्फ अस्तित्व ही नहीं है बल्कि शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक स्तर पर इंद्रियों से जुड़े सुखों की लालसा की खोज है।

मानव जाति की सभी पीड़ाओं और दुखों का स्रोत "अटैचमेंट" और "भय" है। मनुष्य अपने नजदीक और प्यारे लोगों से जुड़ा हुआ है और अपने कार्यों के चक्र का विस्तार करने में असमर्थ है। उसके कार्य केवल अपने परिवार के कल्याण और उसके अधिकांश मित्रों और रिश्तेदारों तक ही सीमित हैं। जिसके कारण व्यक्तिगत

जीवन में और पेशेवर जीवन में उसके कार्य पक्षपातपूर्ण हैं और वह अनिश्चितताओं से भी डरता है जो उसके और उसके नजदीकी और प्रियजनों के साथ हो सकती हैं। कृष्ण हर मोर्चे पर क्रांतिकारी विचारों के धनी रहे हैं। उनका सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि वह किसी बँधी-बँधाई लीक पर नहीं चले, मौके की जरूरत के हिसाब से उन्होंने अपनी भूमिका बदली और अर्जुन के साथी तक बने।

कृष्ण ने अर्जुन को समझाया था कि, मानव आत्मा एक वृत की तरह शाश्वत है। कोई भी वास्तव में उसे मार नहीं सकता है, और इसलिए उसे जीवन में युद्ध के मैदान में चिंतित या भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। आप निःर और बहादुर बनना सीख सकते हैं, तो अपने जीवन को सम्मान से जी सकते हैं, आप की देह नाशवान हैं लेकिन आपका विवेक, आपकी आत्मा नहीं।

अर्जुन को भगवान कृष्ण ने शिक्षित किया था कि वह एक नश्वर प्राणी है; एक व्यक्ति जो खाली हाथ पैदा हुआ है, और अंत में मरने पर खाली हाथ होगा। इससे, आप समझ सकते हैं कि आपके पास जो कुछ भी है वह ईश्वर से है और जो कुछ भी आप खो देते हैं, या देते हैं, वह स्वयं भगवान के पास जाता है। यह आपको निःस्वार्थ होना सिखाता है। कृष्ण से जुड़ी किसी भी कहानी को पढ़ें तो आपको ये बात साफतौर पर देखने को मिलेगी कि इंसान को दूरदर्शी होना चाहिए और उसे परिस्थिति का आकलन करना आना चाहिए।

कृष्ण हमें यह भी सिखाते हैं कि मुसीबत के समय या सफलता न मिलने पर हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। इसकी बजाय हार की वजहों को जानकर आगे बढ़ना चाहिए। समस्याओं का सामना करें। एक बार डर को पार कर लिया तो फिर जीत आपके कदमों में होगी।

भगवान कृष्ण की एक महत्वपूर्ण सलाह यह भी थी कि कुछ भी असम्भव नहीं है। अगर मन संकल्पित और निःर है तो आसान मार्ग आसान लक्ष्य तक पहुँचते हैं और दुरुह मार्ग असाध्य लक्ष्य की प्राप्ति कराते हैं। इससे, हम सीख सकते हैं कि हमारी नियति तक पहुँचने के लिए कोई शॉर्टकट नहीं हैं, और नियति तक पहुँचने के लिए यदि आप संघर्ष करना चाहते हैं तो कोई बाधा आपको कभी नहीं रोक सकती।

भगवान कृष्ण की सभी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी द्वापर या कहें उनके काल में थीं। आप उनमें से अधिकतर को काफी अंतर्दृष्टिपूर्ण पाएँगे, और जो आप दिन-प्रति-दिन जिन समस्याओं का सामना करते हैं उनके लिए अत्यधिक प्रासंगिक हैं। इन शिक्षाओं के साथ, आप जीवन के अर्थ, परम सत्य और अपने दिमाग और आत्मा के ऐसे कई महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में सक्षम हो सकते हैं।

सही या अच्छी चीज करना हमेशा आसान या आरामदायक नहीं है - खासकर आज के समय में। यदि आप कृष्ण की सलाह का पालन करना चाहते हैं और 'धर्म' द्वारा निर्धारित सिद्धांतों पर अपना जीवन जीना चाहते हैं, तो आपको जीवन में अनुसरण करने के मार्ग के बारे में मजबूत, स्वतंत्र और स्पष्ट होना होगा।

भगवान कृष्ण की शिक्षाएँ हर किसी के लिए उपयुक्त हैं। "वह सिर्फ समाज के किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं आये थे। उन्होंने सभी को दिखाया - यहाँ तक कि वेश्याओं, लुटेरों और हत्यारों को भी आध्यात्मिक प्रगति की राह बताई। वह हमें अपने सच्चे धर्म के अनुसार जीने का आग्रह, इसमें दृढ़ बने रहने के लिए और जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। कृष्ण का जीवन पिछले युगों के लिए, आधुनिक दुनिया के लिए और निश्चित रूप से आने वाले लोगों के लिए एक आदर्श है।

अपने दृष्टिकोण और कर्म में सकारात्मकता से अपना 'धर्म' का पालन करना ही कृष्ण का अनुसरण है।





फ्रादर्स डे

मदन लाल गुप्ता

(फ्रादर्स डे पर यह लेख स्वर्गीय श्री सत्य पाल ठाकुर जी को समर्पित है। ठाकुर साहिब एक अच्छे पिता की तरह परिवार की हर कठिनाई में सहायता करते थे। वह दो आज्ञाकारी, विनम्र और होनहार पुत्र रत्नों के पिता थे। आपके कठिन परिश्रम से ही वसुधा के त्रैमासिक अंक पाठकों तक पहुँचते थे, तथापि वे कभी भी इसका श्रेय लेने के पक्ष में नहीं रहे वरन् सदैव ही उन्होंने पृष्ठभूमि में रह, पृष्ठाधार बन, निःस्वार्थ भाव से हिन्दी के प्रचार-प्रसार, उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान देकर एक अहम् भूमिका निभाई। अब वसुधा के प्रकाशन, सम्पादन और वितरण का सारा कार्य भार श्रीमती डॉ. स्लेह ठाकुर जी को अकेले ही करना होगा। प्रभु से प्रार्थना है कि स्लेह जी को अधिक शक्ति दे और वह अकेली इस कार्य को कुशलता पूर्वक जारी रखें; श्री सत्य पाल ठाकुर जी के चरणों में यही सज्जी श्रद्धांजलि होगी। ईश्वर स्वर्गीय को अपने चरणों में स्थान दें। मदन लाल गुप्ता)

शीला ब्राचफेल्ड (Brandeis University) ने अपने 'चाइल्ड 1980' डॉक्टरेट शोध प्रबंध में माता और पिता से केवल "अपने बच्चे के साथ मस्ती करने के लिए कहा है। उस के अनुसार पिता का शिशुओं के साथ उनका पहला और एकमात्र एकल आउटिंग होता था। पिता की बच्चों को हवा में उछालने या फर्श पर लुड़काने की खेल शैली बहुत सक्रिय थी, जबकि माताओं की खेल, शिक्षण, टीचिंग, गाना और चुपचाप बैठना जैसे कौशल पर आधारित थी। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर माइकल लैंब के हाल के 'बचपन के साहित्य' के अनुसार, खेलने की इच्छा होने पर बच्चे पिता की ओर तथा तनावग्रस्त या परेशान होने पर माताओं की ओर रुख करते हैं।

भारत में फ्रादर्स डे का कोई इतिहास नहीं है। विदेश में यह वर्ष में केवल एक विशेष दिन पिता को उपहार देने या लंच पर ले जाने तक सीमित है। आजकल भारत त्योहार मनाने में अमेरिका की नकल कर रहा है। भारत की संस्कृति या रिवाजों से अमेरिकन त्योहारों का दूर का भी कोई वास्ता नहीं है, जैसे कि Valentine Day, Saint Patrick's Day.

भारत में फ्रादर्स डे हर रोज़ मनाया जाता है, पाँच यज्ञों में से तीसरा पितृ यज्ञः है (माता-पिता की सेवा)। हमारे माता-पिता ने हमें जन्म दिया, हमारा पोषण किया, हमें शिक्षा और जीवन की सभी आवश्यकताएँ दीं। इसलिए हिन्दू शास्त्र कहते हैं कि बुजुर्ग की सेवा महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने उन चीज़ों का निर्माण किया जिन का अब हम आनंद ले रहे हैं।

पैर छूना : मान्यता है कि नियमित तौर पर बड़े-बुजुर्गों के चरण स्पर्श करने से कई प्रतिकूल ग्रह भी अनुकूल हो जाते हैं। 'न्यूटन के नियम के अनुसार, दुनिया में सभी चीजें गुरुत्वाकर्षण के नियम से बँधी हैं। साथ ही गुरुत्व भार सदैव आकर्षित करने वाले की तरफ जाता है। हमारे शरीर पर भी यही नियम लागू होता है। सिर को उत्तरी ध्रुव और पैरों को दक्षिणी ध्रुव माना गया है। इसका मतलब यह हुआ कि गुरुत्व ऊर्जा या चुम्बकीय ऊर्जा हमेशा उत्तरी ध्रुव से प्रवेश कर दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रवाहित होकर अपना चक्र पूरा करती है। यानी शरीर में उत्तरी ध्रुव (सिर) से सकारात्मक ऊर्जा प्रवेश कर दक्षिणी ध्रुव (पैरों) की ओर प्रवाहित होती है। दक्षिणी ध्रुव पर यह ऊर्जा असीमित मात्रा में स्थिर हो जाती है। पैरों की ओर ऊर्जा का केंद्र बन जाता है। पैरों से हाथों द्वारा इस ऊर्जा के ग्रहण करने को ही हम 'चरण स्पर्श' कहते हैं।

पिता जीवन की आवश्यकताएँ प्रदान करता है : परिवार के मुखिया के रूप में, पिता अपने बच्चों को एक सभ्य जीवन देने के लिए ज़िम्मेदार होता है। एक पिता अपने बच्चों के लिए कितना महत्वपूर्ण है? शोध कहता है कि एक बच्चे की भलाई, शिक्षा, व्यवहार और मानसिक शक्ति सभी उनकी परवरिश में उनके पिता की भागीदारी

पर निर्भर करती है. प्रसिद्ध समाजशास्त्री डॉ डेविड पोपेने का कहना है कि "पिता घर में सिर्फ 'दूसरे वयस्कों' की तुलना में कहीं अधिक है. पिता अपने बच्चों के लिए सकारात्मक लाभ लाते हैं जो किसी अन्य व्यक्ति से लाने की सम्भावना नहीं है." बच्चों का भी मानना है कि उनके पिता हमेशा सही होते हैं. वह उनसे कभी झूठ नहीं बोलेगा, वह उनके साथ कभी विश्वासघात नहीं करेगा, वह कभी भी उनका साथ नहीं छोड़ेगा. यह विश्वास है कि एक अच्छा पिता एक बच्चे को बनाता है.

बच्चों को विश्वास है कि मुसीबत के समय पिता उनका सही मार्ग दर्शन करता है. पिता की उपस्थिति फुटबॉल मैच या वाद-विवाद प्रतियोगिता कार्यक्रम स्थल पर बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है. एक अच्छा पिता अपने बच्चों की बात सुनने के लिए समय निकालता है. वह अपने बच्चों को अविभाजित ध्यान देता है और चीज़ों को उनके दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करता है. एक पिता जीवन के बारे में पाठ पढ़ाता है. वह बताता है कि विफलता या निराशा मिलने पर बच्चे अपनी भावनाओं को कैसे चित्रित कर सकते हैं, कैसे अपनी ऊर्जा का उपयोग अपने अच्छे के लिए कर सकते हैं, कैसे अपने करियर की योजना बना सकते हैं या घंटों अध्ययन कर सकते हैं.

फ़ार्डर्स डे एक उत्सव है जो पिता का सम्मान करता है. कैथोलिक यूरोप में यह १९ मार्च, सेंट जोसेफ डे के रूप में मनाया जाता रहा है. यह उत्सव स्पेनिश और पुर्तगालियों द्वारा लैटिन अमेरिका में लाया गया था. हालाँकि यूरोप और अमेरिका के कई देशों ने जून के तीसरे रविवार को फ़ार्डर्स डे मनाने के लिए अपनाया है. फ़ार्डर्स डे दुनिया के कई हिस्सों में विभिन्न दिनों आमतौर पर मार्च, अप्रैल और जून के महीनों में मनाया जाता है. कैथोलिक चर्च ने St. Joseph's Day पर फ़ार्डर्स डे के उत्सव का सक्रिय रूप से समर्थन किया है. वास्तव में, एक महिला, सोनोरा स्मार्ट डोड के प्रयासों के बिना फ़ार्डर्स डे आज इस स्थिति तक नहीं पहुँचा होता. एक कारण यह था कि डोड छुट्टी के बारे में बहुत भावुक थी. वह और उसके छह भाई-बहनों का पालन पोषण एकल पिता विलियम जैक्सन स्मार्ट द्वारा किया गया था.

चर्च में मातृ दिवस के विषय में सुनने के पश्चात डोड अपने पिता के जन्म दिन पर फ़ार्डर्स डे का उत्सव चाहती थी. उसका मूल विचार यह था कि फ़ार्डर्स डे की छुट्टी उसके पिता के जन्मदिन ५ जून को होनी चाहिए. फार्डर्स डे का उत्सव मनाने की तैयारी करने के लिए कम समय होने के कारण कार्यक्रम को १९ जून, १९१० (महीने के तीसरे रविवार) को प्रस्तावित किया गया. १९११ में, जेन एडम्स ने प्रस्तावित किया कि शिकागो में एक शहरव्यापी फ़ार्डर्स डे समारोह का आयोजन किया जाना चाहिए. १९१२ में, वाशिंगटन, वैंकूवर में फ़ार्डर्स डे समारोह मनाया गया. लायंस क्लब के सदस्य हैरी मीक ने दावा किया कि वह पहली बार १९१५ में फ़ार्डर्स डे के लिए विचार लेकर आया था. मीक ने फ़ार्डर्स डे मनाने के लिए जून का तीसरा रविवार चुना क्योंकि यह उनका जन्मदिन था. लायंस क्लब ने उन्हें "फ़ार्डर्स डे का प्रवर्तक" नाम दिया है. मीक ने फ़ार्डर्स डे को बढ़ावा देने और इसे आधिकारिक छुट्टी बनाने के लिए कई प्रयास किए.

१९१६ में, राष्ट्रपति विल्सन, 'फ़ार्डर्स डे' समारोह में बोलने के लिए स्पोकेन पधारे, वे इसे संघीय अवकाश बनाना चाहते थे, लेकिन काँग्रेस ने विरोध किया. यह डर था कि इसका व्यवसायीकरण हो जाएगा. अमेरिकी राष्ट्रपति कैल्विन कुलीज़ Calvin Coolidge ने १९२४ में सिफारिश की थी कि इस दिन को पूरे राष्ट्र में मनाया जाए. १९५७ में सेनेटर मार्गरिट ने फ़ार्डर्स डे का प्रस्ताव लिखा, जिसमें काँग्रेस पर माताओं को सम्मानित करते हुए ४० वर्षों तक पिता की अनदेखी करने का आरोप लगाया गया था तथा इस प्रकार, माता-पिता में से केवल एक को ही पहचाना. १९६६ में, पिता का सम्मान करते हुए राष्ट्रपति जॉनसन ने फ़ार्डर्स डे के रूप में जून के तीसरे रविवार को नामित करते हुए, पहली राष्ट्रपति उद्घोषणा जारी की. ६ साल बाद राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने १९७२ में फ़ार्डर्स डे को कानून स्थायी राष्ट्रीय अवकाश बना दिया. अब यह दुनिया भर के करोड़ों

लोगों के लिए एक आनंदित उत्सव है. कई देशों में पुरुषों के सम्मान में १९ नवम्बर को अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाया जाता है.

अधिकांश कनाडाई डैड 'फादर्स डे' को अपने बच्चों से उपहारों लंच और डिनर की मेज़बानी की आशा करते हैं, लेकिन यह ध्यान देने की बात है कि 'Retailmenot.ca' द्वारा कनाडा में मार्च २०१८ के सर्वेक्षण के अनुसार, "अधिकांश डैड्स (७९%) इस बात से सहमत हैं कि पिता, फादर्स डे पर उपहार की कम उम्मीद करते हैं, जबकि 'मदर्स डे' पर माताएँ अधिक उम्मीद करती हैं.

मेरे कंधे पर बैठा मेरा बेटा, जब मेरे कंधे पर खड़ा हो गया,
मुझसे कहने लगा, देखो पापा मैं तुमसे बड़ा हो गया.
मैंने कहा बेटा, इस गलत फ़हमी में भले ही जकड़े रहना,
मगर मेरा हाथ पकड़े रहना,
जिस दिन यह हाथ छूट जाएगा,
बेटा तेरा रंगीन सपना भी टूट जाएगा.
दुनिया वास्तव में उतनी हसीन नहीं है,
देख तेरे पाँव तले अभी ज़मीन नहीं है.
मैं तो बाप हूँ बेटा, बहुत खुश हो जाऊँगा,
जिस दिन तू वास्तव में बड़ा हो जाएगा,
मगर बेटे कंधे पर नहीं, जब तू ज़मीन पर खड़ा हो जाएगा.
ये बाप तुझे अपना सब कुछ दे जाएगा
और तेरे कंधे पर दुनियाँ से चला जाएगा ! (सूत्र)

पद्म विभूषण, श्री घनश्यामदास बिड़ला, भारत के औद्योगिक बिड़ला समूह के संस्थापक थे. वे स्वाधीनता सेनानी, गाँधीजी के मित्र, सलाहकार, प्रशंसक एवं सहयोगी थे. घनश्याम दास बिड़ला द्वारा अपने पुत्र बसंत कुमार बिड़ला के नाम १९३४ में लिखित एक अत्यंत प्रेरक पत्र - **चि. बसंत,**

यह जो लिख रहा हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना, अपने अनुभव की बात कहता हूँ. संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया, वह पशु है. तुम्हारे पास धन है, तन्दुरस्ती है, अच्छे साधन हैं, अगर उनको सेवा के लिए उपयोग किया, तब तो साधन सफल हैं अन्यथा वे शैतान के औजार हैं. तुम इन बातों को ध्यान में रखना. धन का मौज-शौक में कभी उपयोग न करना, ऐसा नहीं कि यह धन सदा रहेगा ही, इसलिए जितने दिन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिए करो, अपने ऊपर कम से कम खर्च करो, बाकी जनकल्याण और दुखियों का दुख दूर करने में व्यय करो.

धन शक्ति है, इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना सम्भव है, इसका ध्यान रखो कि अपने धन के उपयोग से किसी पर अन्याय ना हो. अपनी संतान के लिए भी यही उपदेश छोड़कर जाओ. यदि बच्चे मौज-शौक, ऐश-आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे. ऐसे नालायकों को धन कभी न देना, उनके हाथ में जाये उससे पहले ही जनकल्याण के किसी काम में लगा देना या गरीबों में बाँट देना. तुम उसे अपने मन के अंधेपन से संतान के मोह में स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते. हम भाइयों ने अपार मेहनत से व्यापार को बढ़ाया है तो यह समझकर कि आप लोग धन का सदुपयोग करेंगे.

भगवान को कभी न भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है, इन्द्रियों पर काबू रखना, वरना यह तुम्हें डुबो देंगीं. नित्य नियम से व्यायाम-योग करना. स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी सम्पदा है. स्वास्थ्य से कार्य में कुशलता आती है, कुशलता से कार्यसिद्धि और कार्यसिद्धि से समृद्धि आती है. सुख-समृद्धि के लिए स्वास्थ्य ही पहली शर्त है, मैंने

देखा है कि स्वास्थ्य सम्पदा से रहित होनेपर करोड़ों-अरबों के स्वामी भी कैसे दीन-हीन बनकर रह जाते हैं। स्वास्थ्य के अभाव में सुख-साधनों का कोई मूल्य नहीं। इस सम्पदा की रक्षा हर उपाय से करना। भोजन को दवा समझकर खाना। स्वाद के वश होकर खाते मत रहना। जीने के लिए खाना है, न कि खाने के लिए जीना है। (घनश्यामदास बिड़ला)।

अब तक तो गये गए, माँ के ही गुणगान, त्याग तपस्या पिता की, माँग रही अवधान,
सृजन सृष्टि के मूल में, पिता श्री का हाथ; कर कंगन मंगल गले, माँ का चमके माथ.
माँ की आँखों से बहे, जब आँसू की धार, पिता पोंछते प्यार से, बन संयम पतवार.
हो सारे परिवार की, पर्वत जैसी पीर, गुमसुम घुटघुट कर पियें, पिता धीर गम्भीर.
उतरन मैले चीथड़े, तन शोभा श्रृँगार, मगर सकल परिवार को, पेंट जींस उपहार.
बहन बेटियाँ हों बिदा, ज्ञेलें बिषम विशाद, नींद पिता की तब उड़े, उठे दहेज विवाद.



यह देश भारत....

अरुण तिवारी

सागर से उठा तो मेघ घना
हिमनद से चला नदी प्रवाह।
फिर बूँद झरी, हर पात भरी
सब सँजो रहे मोती—मोती ॥
है लगे हजारों हाथ,
यह देश भारत....



कहीं नौळा है, कहीं धौरा है
कहीं जाबो कूळम आपतानी ।
कहीं बँधा पोखर पाइन है
कहीं ताल, पाल औ झाल सजे ॥
कहीं ताल—तलैया ता ता थैया,
यह देश भारत....
यहाँ पनघट पर हँसी—ठिठोली है
नदी तट पर लगती रोली है ।
जल मेला है, जल ठेला है
जल अंतिम दिन का रेला है ॥
जल पंचतत्व, जल पदप्रधान
यह देश भारत....
जल वरुणदेव, नदियाँ माता
जल ही वजु—पूजा—संस्कार ।
जल से सारी सभ्यतायें
जल एक ही है, पर नेक आधार ।
माँ भारती का जलगान है यह
यह देश भारत.....

दुर्गारानी

डॉ. गोपेश मोहन जैसवाल

शादी के करीब दो महीने बाद मुझे अपने पतिदेव के साथ अपनी ससुराल (लखनऊ) से अल्मोड़ा जाना था. पहाड़ में प्रवास के नाम पर शादी से पहले मैं अपने मायके रामपुर से सिर्फ़ नैनीताल और मसूरी गई थीं, वह भी मात्र दो-चार दिन के लिए। लखनऊ से काठगोदाम तक का सफ़र तो आराम से ट्रेन में गुज़र गया पर वहाँ से के. एम. ओ. यू. (कुमाऊँ मोर्टर्स ओनर्स यूनियन लिमिटेड) की खस्ताहाल बस से अल्मोड़ा तक का सफ़र तो मेरे लिए जानलेवा था. मेरा सर चकरा रहा था, जी घबड़ा रहा था पर हमारे पतिदेव थे कि मुझे पूरे कुमाऊँ का भूगोल और इतिहास सुनाए जा रहे थे. राम-राम करते-करते पाँच घण्टे बाद हम अल्मोड़ा पहुँचे तो मेरा मन और भी खिल हो गया. ऊँची-नीची और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों, डरावनी घाटियों और कँपकपाती ठन्ड बरसाने वाले विशाल और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के बीच बसे इस सुनसान से शहर को देखकर मुझे कोई खुशी नहीं हुई. थकी-हारी, सहमी-सहमी, घर-गृहस्थी के कुल-जमा बीस अदद के ढेर पर बैठी मैं टैक्सी की प्रतीक्षा में थी और ये थे कि वहाँ पर मेटों की तलाश में लगे थे. खैर, सारा सामान मेटों ने लाद लिया और हम पैदल ही खत्यारी स्थित अपने महल की ओर बढ़ चले. मेरे लिए तो रास्ता खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था. हम घर पहुँचे तो वहाँ की दुर्दशा देखकर तो मुझे बाकायदा रोना आ गया. हमारा दो कमरे का मकान था पर लगता था कि उसका सारा सामान एक अदद बैड पर ही सैट किया गया था. वाह क्या सफ़ाई थी, और किस करीने से बिस्तर पर किताबें, सूटकेसेज़, बर्तन और यहाँ तक कि खाने का सामान भी सजाया गया था. किचिन का हाल तो और भी बुरा था. मैं अपनी सारी थकान, अपना सर दर्द भूलकर घर-सफ़ाई अभियान में जुटी तो ये इत्मीनान से बोले - “मैडम! आप तो आराम से बाहर कुर्सी पर बैठकर या खिड़की के पास लेटकर प्रकृति के नज़ारे देखिए. ये सब काम तो दुर्गारानी देख लेंगी.”

मेरे कान खड़े हुए, मैंने पूछा - “ये दुर्गारानी कौन हैं?”

इन्होंने उत्तर दिया - “अब अल्मोड़ा आई हो तो दुर्गारानी को भी जान जाओगी, बाई द वे गिफ्ट्स वाली साड़ियों में से हरी वाली साड़ी दुर्गारानी के लिए निकाल देना और एक मिठाई का डिब्बा भी.”

मेरे समझ में यह कर्तव्य नहीं आ रहा था कि ये दुर्गारानी कौन हैं, रानी हैं तो घर का काम कैसे करेंगी और घर का काम करने वाली हैं तो इन्हें रिश्तेदारों के लिए आई साड़ियों में से साड़ी क्यों दी जाय? मेरे मन में सवाल तो और भी थे जैसे कि इन दुर्गारानी की उम्र क्या है और देखने-सुनने में कैसी हैं? शिवानी की कहानियाँ पढ़-पढ़कर कुमाऊँ की कन्याओं के सौन्दर्य का आतंक मेरे दिल में छाया हुआ था. इनसे दुर्गारानी के बारे में डिटेल्स पूछने की मेरी हिम्मत नहीं हुई पर मन ही मन मैंने यह तय कर लिया था कि अगर यह दुर्गारानी कम उम्र की और सुन्दर हुई तो उनकी मैं कल ही छुट्टी कर दूँगी. रात हम कब सो गए यह पता ही नहीं चला पर सुबह होने का का पता ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा भड़भड़ाने की आवाज़ से चल गया. ये तो बाथरूम में थे, मज़बूरन मुझको ही उठकर दरवाज़ा खोलना पड़ा. मैंने देखा कि एक साढ़े चार फुट की, सत्तर साल के करीब की, झुकी पीठ वाली, छोटी-छोटी आँखों वाली, गोरी-चिट्ठी एक पतली-दुबली सी पर रौबदार बुड़िया चटक नीले रंग की ओढ़नी और लाल-हरे घाघरा में सजी, लाठी पकड़े खड़ी है. मुझको एकटक धूरते हुए बुड़िया कुमाऊँनी मिश्रित हिंदी में बोली -

“अच्छा तो बहू आ गया. अच्छा है, हाथ, पैर, आँख, नाक दुरुस्त है पर बाबू से साँवला है, बाल लम्बा है, मेमों की तरह बलकटो नहीं है.”

इससे पहले कि मैं अपने इस मून्यांकन पर खुश होती या रोती, तब तक बुढ़िया एक तरह से मुझे ढकेलते हुए अपनी चाँदी की पाज़ेब छमछमाती घर में घुस गई. तब तक ये बाथरूम से निकल आए थे। इन्हें देखकर उसने बड़े रौब से इनसे पूछा - “बाबू ! मेरी साड़ी लाया, मिठाई लाया?”

इन्होंने साड़ी और मिठाई का डिब्बा उसके हवाले किया तो मुझे बड़ा गुस्सा आया पर साथ ही साथ फिर मैंने राहत की साँस भी ली। इन दुर्गारानी से मुझे शिवानी की कहानियों की नायिकाओं वाले खतरे की कोई बात नहीं थी। मेरे लिए एक अच्छी बात यह भी हुई कि दुर्गारानी से मुँह दिखाई में मुझे ग्यारह रुपये भी प्राप्त हुए। इन्होंने उलाहना देते हुए दुर्गारानी से कहा -

“ये क्या? बस ग्यारह रुपये? कैसी सास हो? खुद पाज़ेब पहने हो और बहू के पैर नंगे हैं?”

सासू माँ ने तन्मयता से मिठाई खाते हुए जवाब दिया - “पाज़ेब अपनी पोती को देगा, वो भी अपने मरते बखत.”

दुर्गारानी विस्तार से भेंट में आए सामान का मुआयना कर रही थीं, अचानक बड़े रौब से मुझसे बोलीं - “जा मेरे लिए अदरक डाल के कड़क चाय बना ला.”

गुस्से के मारे मेरा तो खून खौल गया पर इन्हें इससे कोई खास झटका नहीं लगा। इन्होंने मुस्कुराकर दुर्गारानी से कहा - “दुर्गारानी ! बहू को अच्छी चाय बनाना तो तुम्हीं सिखाओगी। आज तुम चाय बनाकर पिला दो, लम्बे सफर से बेचारी थक गयी है कल से चाय यही बनाएगी.”

मैं यह सुनकर चुपके-चुपके अपना सिर धून रही थी कि दुर्गारानी की ओर से एक और बम फूटा - अब बहू आ गया है। दुर्गारानी बर्तन-झाड़ू नहीं करेगा, बस ऊपर का काम कर देगा.”

यहाँ ये फिर मेरी मदद के लिए आ गए। इन्होंने दुर्गारानी को समझाया कि ये बेचारी पहली बार अपने घर से निकली है और पहाड़ में तो कभी रही ही नहीं है इसलिए अब उसे ही अपनी बहूरानी को काम करने की ट्रेनिंग देनी पड़ेगी। जैसे-तैसे दुर्गारानी को पहले की ही तरह झाड़ू-बर्तन करते रहने के लिए राज़ी किया गया। मैं एक नौकरानी को दादी-नानी का आदर देने वाले अपने पतिदेव पर हैरान थी। दुर्गारानी के प्रस्थान के बाद जब यह बात मैंने इनसे कही तो ये हँसने लगे, फिर मुझे समझाते हुए इन्होंने कहा -

“दुर्गारानी को कुछ दिन समझ लो फिर बताना कि मैं उसे सिर पर चढ़ाकर ठीक करता हूँ या गलत?”

हफ्ते-दो हफ्ते तक दुर्गारानी पर मेरा गुस्सा बना रहा। मुझे खुद पर पर सास वाला रौब गाँठने वाली नौकरानी नहीं चाहिए थी। पर अल्मोड़ा में एक महीना बीतते-बीतते इस अनजान शहर में पता नहीं क्यों वही एक मुझे अपनी-सी लगाने लगी थी। इनके दोस्तों की पत्रियों से अभी मेरी आत्मीयता नहीं हो पाई थी। दुर्गारानी कभी मुझको उदास या अनमना देखती तो मेरे सिर पर हाथ फेर कर मुझ से पूछती -

“बहू! माँ याद आ रहा है? पिताजी का याद आ रहा है?”

बलकटो मेमों के प्रति उसके आक्रोश का ठिकाना नहीं था। उसे मेरे लम्बे-घने बाल बहुत अच्छे लगते थे। मेरे बालों में तेल डालकर मेरी चोटी गूँथने में उसे बहुत आनन्द आता था। मेरे बाल बनाते-बनाते वह मुझे समझाती - “बहूरानी ! अपनी चोटी हमेशा लम्बी ही रखना। चोटी लम्बी रखेगा तो बाबू इससे बँधा रहेगा। बलकटो मेम बनेगा तो बाबू कहीं और भाग जाएगा.”

दुर्गारानी की रनिंग कमेन्ट्री हमेशा जारी रहती थी, यह बात और थी कि उसमें से आधी से ज़्यादा बातें मेरे पल्ले ही नहीं पड़ती थी पर उनसे मेरा मन ज़रूर बहला रहता था। अब मुझे पता चल गया था कि दुर्गारानी के बारे में ये कितने सही थे। पहले दिन मुझको खिजाने वाली, इनकी सरचढ़ी इस कड़क बुढ़िया ने कुछ ही दिनों में मेरा दिल भी जीत लिया था। मेरी हर पसन्द-नापसन्द का उसे ख्याल रहता था। उसने तरह-तरह के स्वादिष्ट

पहाड़ी व्यंजन खिलाकर मेरी और इनकी डायट्री हैबिट्स ही बदल दीं और मुझको भी पहाड़ी पकवान बनाने में एक्सपर्ट बना दिया. मेरी संगीत में बहुत रुचि है, कुमाऊँनी लोकगीत तो मुझे अपने बचपन से अच्छे लगते थे पर उन्हें सिखाने वाला मुझे अब तक कोई ढंग का गुरु नहीं मिला था. दुर्गारानी को सैकड़ों लोकगीत याद थे. इन गीतों की भाषा तो मेरे पल्ले नहीं पड़ती थी पर उनकी लय-ताल से और दुर्गारानी के सधे गले की बदौलत उनके भाव पूरी तरह से मेरी समझ में आ जाते थे. उससे न जाने कितने कुमाऊँनी गीत मैंने सीख डाले थे. अब मैंने अपनी संगीत गुरु को ईंजा कहना शुरू कर दिया था पर बाकी दुनिया के लिए वह दुर्गारानी ही थी.

दुर्गारानी इन पर तो हमारी शादी से पहले ही जान छिड़कती थी. उसे इनकी चुहलबाजी और प्यार भरी छेड़-छाड़ बहुत अच्छी लगती थी. कॉलेज से वापस आने में इन्हें अगर देर हो जाती थी तो वह अपने सवालों से मेरी नाक में दम कर देती थी. खाना बाबू की पसन्द का ही बने, इसकी ज़िम्मेदारी तो मेरी थी पर इसकी फ़िक्र करना दुर्गारानी का खुद की ही ओझी हुई ज़िम्मेदारी थी. अब दुर्गारानी का सारा दिन हमारे साथ ही बीतता था. दर-असल उसे किसी के यहाँ काम करने की ऐसी कोई खास ज़रूरत भी नहीं थी। उसका पति फ़ौज में था, उसकी विडोज़ पेंशन उसके अपने खर्च के लिए काफ़ी थी पर उसका शराबी बेटा कल्लू अपनी बोतल के लिए पैसे जुटाने के लिए बुढ़िया माँ से मज़दूरी करवाता था, वही उसकी तनख्वाह भी आकर ले जाता था. नशे में या नशा उतरने के गुस्से में माँ के ऊपर दो-चार हाथ छोड़ना उसके लिए मामूली बात थी. एक बार तो उसने अपनी माँ का सिर ही फ़ोड़ दिया. ये तो उस दुष्ट को पुलिस में देना चाह रहे थे पर उस अभागी माँ ने ही इनके पैर पड़कर अपने कपूत को जेल की चढ़ी पीसने से बचा लिया.

हमारे घर में नन्हा-सा मेहमान आने वाला था. ऐसे वक्त में दुर्गारानी न जाने कब मेरे लिए माँ, देसी डॉक्टर, नर्स और न जाने क्या-क्या बन गई. पहले दिन मुझसे झाझू-बर्तन करवाने की खाहिश रखने वाली दुर्गारानी अब घर का खाना भी बनाती थी, घर के सारे कपड़े भी धोती थी और तरह-तरह से मेरा मन भी बहलाती थी, मेरी और हमारे होने वाले बच्चे की सलामती के लिए वह पता नहीं कितने अनुष्ठान करती रहती थी. आए-दिन वह मेरे सिर पर चावल और फूल छिड़क, इनके और मेरे माथे पर तिलक लगाकर कोई मंत्र पढ़ती फिर हम दोनों को प्रसाद खिलाती थी.

मैं डिलीवरी के लिए अपने मायके रामपुर चली गयी. वहाँ सब मेरे अपने थे पर न जाने क्यों मुझे वहाँ भी दुर्गारानी की कमी बहुत खल रही थी. बिट्या के साथ जब मैं अल्मोड़ा पहुँची तो दुर्गारानी की सारी दुनिया हमारी बेटी में ही सिमट गई. उसका हर काम वही करती थी, मैं तो बस बैठे-बैठे उसके कुमाऊँनी गीत सुनती रहती थी. चाहे आँधी हो चाहे तूफ़ान, चाहे बारिश हो चाहे स्नो-फॉल, हमारी बेटी को देखे बिना और उसकी सेवा किए बगैर दुर्गारानी का मानो सवेरा ही नहीं होता था.

उसके नालायक बेटे कल्लू से उसकी ये खुशियाँ देखी नहीं गयीं. इनके कहने पर दुर्गारानी ने उसे बोतल के लिए पैसे देने बन्द कर दिए थे. एक बार पैसे न मिलने के कारण गुस्से में उसने अपनी माँ को मार-मार कर लहू-लुहान कर दिया. इस बार दुर्गारानी के लाख रोकने के बावजूद इन्होंने कल्लू की पुलिस में रिपोर्ट कर दी. बेचारी बुढ़िया इनके डर से इनसे तो कुछ नहीं बोली पर जैसे ही वह कुछ ठीक हुई तो लाठी टेकते हुए थाने पहुँची और कुछ दे-दिवा कर बेटे को लॉक-अप से छुड़ा लाई. ये तो दुर्गारानी पर बहुत नाराज़ हुए पर वो इन्हें पुचकारते हुए बोली – “बाबू ! दुर्गारानी का आखरी बखत है, उस पर अब गुस्सा मत करना. बुढ़िया जब मर जाए तो तुम और करमजला कल्लू उसको कन्धा देना और मरघट में फ़ूँक कर भी आना.”

दुर्गारानी इस हादसे के बाद हमारे यहाँ काम करने के लिए नहीं आ पाई. दो-चार बार हम ही उसके घर जाकर उससे मिल आए. इधर कल्लू बाबू की शराबखोरी ने अपने गुल खिलाने शुरू कर दिए थे. भरी जवानी में उसके फेफड़े और जिगर जवाब दे गए थे. हम भगवान से मना रहे थे कि बेटा माँ के सामने न चला जाए पर हमारी प्रार्थना बेकार गई. कल्लू के मरने पर दुर्गारानी को कोई ताज्जुब नहीं हुआ, शायद वह इस

हादसे के लिए पहले से तैयार थी. बेटे की अर्थी उठते समय वह बिलकुल रोई नहीं, बस, इनका हाथ पकड़कर बोली – “बाबू कल्लू तो धोखा दे गया. अब इस बुढ़िया को तुम्हीं फूँक कर आना.”

कल्लू की मौत के दो महीने बाद ही दुर्गारानी का बुलावा भी आ गया. उसके आखरी वक्त में हमारा परिवार उसके पास था. हमारी बेटी को अपने सीने पर लिटाकर उसने प्यार किया और एक पोटली में से उसके लिए वही अपनी चिर-परिचित चाँदी की भारी-भरकम पाज़ेब निकालकर उसके नन्हे से पाँवों में पहना दीं.

दुर्गारानी को कन्धा देकर और उसका अंतिम संस्कार करके इन्होंने उसकी छवाहिंश पूरी की.

दुर्गारानी की प्यार भरी ज़िड़कियाँ, उसके अधिकार भरे अनुरोध सुनने के लिए अब हमारे कान तरसते हैं, लगता है लाठी टेकती, छमछम करती वह अचानक हमारे सामने खड़ी हो जाएगी और फिर मुझे आलू की पकोटी (पकौड़ी) के साथ अदरक डालकर कड़क चाय बना लाने का आदेश देगी. मैं जब भी अपने बाल बनाती हूँ तो एक पल इन्तज़ार करती हूँ कि कब मेरी बो पहाड़ी इजा आएगी और मेरे हाथों से कंधी छीनकर खुद मेरे बाल बनाएगी.

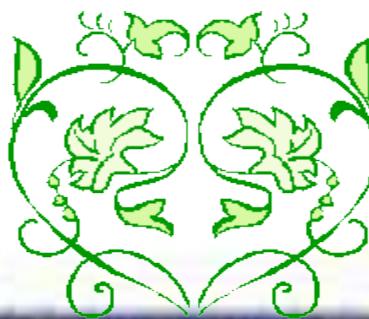
हैरत की बात है कि दुर्गारानी की कोई तस्वीर हमारे पास नहीं है, बदकिस्मती से उसके लोकगीतों को भी मैं रिकॉर्ड नहीं कर पाई थी. पर इन निशानियों की हमको खास ज़रूरत भी नहीं है. मुझे लगता है कि जब तक मेरे होठों पर मेरी उस पहाड़ी इजा के सिखाए लोक गीत रहेंगे तब तक वह मेरी यादों में बसी रहेगी. उसके सिखाए पहाड़ी व्यंजनों को मैं जब-जब बनाऊँगी तब-तब वह उनमें महकती रहेगी. और जब बड़ी होकर हमारी बेटी उसकी दी हुई पाज़ेब पहन कर छमछम करती इधर-उधर भागती फिरेगी तब तक वह हमारे दिलों में ज़िन्दा रहेगी.



गङ्गल

देवकी नन्दन 'शान्त'

मेरी बच्ची तू मुझे अपनी उदासी दे दे
 बेबसी में जो बसी है वो कहानी दे दे
 मैं बिना माँगे तुझे देता हूँ हँसने की दुआ
 तू मुझे अपनी इन आँखों का पानी दे दे
 जिन्दगी नाम है चलने का तू रुकना नहीं
 प्यार की ठहरी नदी को तू रवानी दे दे
 मुश्किलें कैसी भी हों तू सब न खोना
 कभी गर्दिशों को तू कोई नामो—निशानी दे दे
 जिन्दगी के मसअले बातों से ही सुलझा किये
 तू भी अपनी बात को लफजों को मानी दे दे
 'शान्त' दिल की है तमन्ना तू सलामत खुश रहे
 इन दुआओं को रजा अपनी जरा सी दे दे .



लावारिस कुत्तों की अनकही त्रासदी

तारकेश कुमार ओझा

हे देश के नीति-नियंताओं। जिम्मेदार पदों पर आसीन नेताओं व अफसरों....आप सचमुच महान हो। जनसेवा में आप रात-दिन व्यस्त रहते हैं। इतना ज्यादा कि आप शुगर, प्रेशर, थाइराइड आदि से परेशान रहते हैं। आप देश के खेवैया हो। राष्ट्र की यह नैया आपके भरोसे ही आगे बढ़ रही है। आपका बड़ा एहसान हम पर है। प्लीज एक एहसान और कीजिए....और इन आवारा - लावारिस कुत्तों का कुछ कीजिए। अपनी बोलेरो, स्कार्पियो आदि से गुजरते समय जगह-जगह आवारा कुत्तों की भीड़ पर आपकी नजर पड़ती ही होगी। कभी-कभार शायद आपकी गाड़ियों के आगे-पीछे दौड़ते भी हों या पहियों के नीचे आ जाते हों। हम नहीं कहते कि आप आवारा या लावारिस कुत्तों को पकड़ कर मार डालिए। आप ऐसा कर भी नहीं सकते। क्योंकि कानून ने इस पर रोक लगा रखा है। देश में हर जगह एक-सी हालत है। लेकिन उनका बंध्याकरण तो किया ही जा सकता है। जिससे कुत्तों की बढ़ती संख्या पर कुछ हृद तक रोक लग सके। शहर की क्या हालत हो गई है, लावारिस कुत्तों की बढ़ती संख्या के चलते। चाय-बिस्कुट की दुकान पर दर्जन भर कुत्ते बुरी तरह से लड़ते-भिड़ते रहते हैं। हर चार कदम पर गैंग्स बना कर बीच सड़क पर बैठे रहते हैं। कब किस पर टूट पड़े कहना मुश्किल है। आप ठहरे बड़े आदमी....। फोर ब्हीलर से चलते हैं। इधर-उधर घूमने वाले आवारा कुत्ते भला आपका क्या बिगड़ लेंगे। इन कुत्तों का आतंक तो हमसे पूछिए....जो बाइक-साइकिल से या फिर पैदल चलते हैं। अक्सर इनका कहर हम पर टूटता है। चौदह इंजेक्शन की पीड़ा भी हमीं झेलते हैं। जबकि यह भी कड़वा यथार्थ है कि सरकारी अस्पतालों में एंटी रैबिज वैक्सिन का घोर अभाव है। प्राइवेट इलाज पर कम से कम दो-दो हजार के दो गुलाबी नोट तो इस पर कुर्बान होने ही हैं। क्या यह हर किसी के लिए आसान है। ऐसा नहीं है कि इस समस्या से पैदा हुई त्रासदी खुद बेचारे लावारिस कुत्तों को नहीं झेलनी पड़ रही। वे भी परेशान हैं। जगह-जगह उनके बीच इलाका दखल को ले लड़ाईयाँ चलती रहती हैं। कभी कार तो कभी बाइक के धक्के से घायल होते रहते हैं। कमर टूट जाने से कोई सड़क पर घिसट्टा नजर आता है तो टाँग टूट जाने के चलते कहाँ कोई कुत्ता घंटों करुण क्रंदन करता नजर आता है। उस रोज एक पिल्ले के लगातार रोने की आवाज हृदय को द्रवित कर गई। क्योंकि वह कड़ाके की ठंड में आश्रय के लिए इधर से उधर भटक रहा था। किसी ने कोई भारी चीज उसके पैरों पर दे मारी थी। जिसके दर्द से वह कराह रहा था। गम्भीर रूप से बीमार कुत्तों की हालत तो और भी दयनीय है। जख्म के शिकार घायल कुत्ते पूरे दिन इधर से उधर खदेड़े जाते हैं। वाहनों की ठोकर से घायल कुत्तों और उनके पिल्लों का दारूण कष्ट संवेदनशील मन को झकझोर कर रख देता है। लेकिन इंसान चाह कर भी उनकी ज्यादा मदद नहीं कर सकता। ज्यादा से ज्यादा उन्हें भोजन-पानी दिया जा सकता है। वह भी एक सीमा के भीतर ही। यह भी हकीकत है कि सड़कों पर विचरने वाले आवारा कुत्तों की सहायता करने वाली स्वयंसेवी संस्थाएँ भी देश में गिनी-चुनी ही हैं। इसलिए बेहतर यही होगा कि जिम्मेदार पदों पर आसीन हमारे नेता व अधिकारी मिल कर लावारिस कुत्तों के मामले में एक ऐसी नीति बनाएँ जो नागरिकों के साथ ही इन कुत्तों के लिए भी हितकर साबित हो।



स्वयं मिट्टी में मिलकर....

विश्वभर व्यग्र

स्वयं मिट्टी में मिलकर
क्षण-क्षण अपने में गलकर
मिटाता अपनी हस्ती को
त्याग कर निज परस्ती को
बीज जब प्रस्फुटित होता
जग उसे अंकुरित कहता
अदृश्य को भुला दिया जाता
दृश्य का गुणगान किया जाता
उसे मिटने में ना होती खीज
बीज स्वयं मिटकर देता बीज
आज एक निकला फिर अंकुर
दिशाएँ छ्वेड रही हैं स्वर
प्रकृति का ये अनुपम व्यवहार
मिटकर बनना ही संसार....



सुभद्रा कुमारी चौहान

(१६ अगस्त, जन्म-दिवस पर विशेष - सम्पादक)

मनोज कुमार शुक्ल 'मनोज'

पास इलाहाबाद के, है निहालपुर ग्राम।
रामनाथ जी थे पिता, घर उनका था धाम॥
सन् उन्नीस सौ चार में, जन्मी थी चौहान।
गोरों के उस काल में, दुखी था हिन्दुस्तान॥
नाम सुभद्रा जब रखा, घर में छाया हर्ष।
मात पिता के लिये था, खुशियों का वह वर्ष॥

संवेदित मन था रहा, संस्कार भंडार।
अबला सबला बन गयीं, बनी धनुष टंकार॥
आजादी की चाह में, कविता हुयी जवान।
लक्ष्मण सिंह की संगिनी, संस्कारों की खान॥
ससुराल में मिल गया, पूरे घर का साथ।
आजादी की चाह में, तान चलीं थीं माथ॥
गाँधी के संग में बढ़ीं, निर्भय सीना तान।
हाथ तिरंगा थाम कर, बनी देश की शान॥
कवि धर्म को है जिया, ओज लेखनी पास।
वीरांगना गाथा सुना, रचा नया इतिहास ॥।
कविता और कहानियाँ, देश प्रेम के बोल।
बिखरेमोति, उन्मादिनी, मुकुल काव्य अनमोल॥

सीधे-साधे चित्र में, रखे अनेकों भाव।
देश भक्ति पतवार से, खेई जीवन नाव।
लक्ष्मी बाई पर लिखी, कविता हुयी महान।
अमर हो गयी लेखनी, बनी जगत पहचान॥।
इस रचना में भर दिया, देश भक्ति पैगाम।
सभी देशवासी उन्हें, शत् शत् करें प्रणाम॥



तुलसी बनाम बैसिल

कादम्बरी मेहरा

“मम्मी ये पास्ते में हरा-हरा क्या डाला है?

“पातक”

“बैसिल डालते हैं।”

“सूखा बैसिल का चूरा डाला तो था मगर काला लगा। थोड़ा सा खुशबू के लिए डाल दिया”.

अगली बार बेटी एक गमले में उगा ताज़ा बैसिल का पौधा ले आई। मैंने पत्ती को तोड़ा और सूँधा।

“अरे यह तो तुलसी है। ज़रा पत्तियाँ बड़ी हैं बसा।”

यहाँ की बड़ी को क्या पता तुलसी के विषय में। मुँह बिचकाकर बोली, “मम्मी कोई भी चीज़ हो, आप जब तक उसे भारत से नहीं जोड़ लेतीं आपकी समझ में नहीं आती। लो अब बैसिल को तुलसी बना दिया।”

“सच में बेटा यह तुलसी की ही जात है।”

गर्भी का मौसम आने पर मैंने भारत से बीज मँगवा कर तुलसी उगाई। खूब हरी-हरी पौध निकली मगर उसे इतनी देर धूप नहीं मिली कि वह पूरे साल रहती। अकट्टबर मास आते-आते मुरझाकर सूख गयी।

अब बैसिल के विषय में पढ़ा। विश्व भर में पाक कला में सबसे अधिक प्रयोग होनेवाली यह पत्ती अपनी खुशबू और औषधि तत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह सोलह आने सच है कि यह तुलसी की ही जात है। तुलसी की १६० प्रजातियों में, तुलसी के सबसे अधिक करीब, इसके गुण और स्वरूप है। वनस्पति विज्ञान जगत इसे भारत की उपज या देन मानता है। यानि भारत भूमि इसका मूलस्थान है। दक्षिणी पूर्वी एशिया में भी इसकी अनेक प्रजातियाँ दवा और भोजन के लिए उगाई जाती हैं।

ईसा से तीन सौ वर्ष पहले ग्रीस राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था। सिकंदर ने इसको एक ओर जहाँ अद्वितीय ख्याति बख्शी, वहीं दूसरी ओर वह अपने उत्तराधिकारी की रक्षा न कर सका। उसके असमय निधन के बाद ग्रीस राजनैतिक रूप से शनैः-शनैः कमजोर होता चला गया। परन्तु अरस्तु और उसके अनुयायियों ने इसे कला, साहित्य एवं अन्य विषयों का अगुआ बना दिया। अरस्तु का शिष्य थियोप्लास्टस उसके बाद उसका उत्तराधिकारी बना। सं २८७ ई ० पू ०। इस विद्वान को राजनीति से अधिक विज्ञान का शौक था। इसने देश विदेश की जड़ी बूटियों एवं औषधियों का अध्ययन किया। इसे वनस्पति शास्त्र का जनक माना जाता है। यानि “Father of Botany” उसने अपने ग्रन्थ में लिखा कि यह भारतीय मूल का पादप है और ५००० वर्ष पुराना है।

वनस्पति शास्त्र में तुलसी का वैज्ञानिक नाम “ओसीमम तेनुफ्लोरम” है। इसे “होली बैसिल” भी कहा जाता है। जबकि यूरोपीय प्रजाति को “स्वीट बैसिल” कहा जाता है। तुलसी का शाब्दिक अर्थ है अतुलनीय।

बैसिल का नाम ग्रीक भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ है राजसी पादप या “रॉयल प्लांट”。 यह दोनों प्रजातियाँ, न केवल अपने मूलस्रोत में एक ही वंश वृक्ष की हैं बल्कि अपनी प्रसिद्धि और प्रयोग में भी समानांतर हैं। इनका इतिहास सांस्कृतिक किंवदंतियों से भरा पड़ा है।

पहले हम अपनी तुलसी की बात करें।

हिन्दू धर्म में कृतज्ञता सर्वोपरि मानी जाती है और इसी कारण हम अपने आस पास, प्रकृति के सभी जड़ और चेतन उपकारी तत्वों को देवत्व प्रदान कर उनकी पूजा करते हैं। अनादि काल से पूजा अन्यथा कुछ भी नहीं, केवल धन्यवाद है। तुलसी भी इसी धन्यवाद की पात्र है।

यह सर्वविदित है कि तुलसी में औषधि तत्व बहुतायत से विद्यमान है। इसकी गुणवत्ता के कारण ही यह भारतीय धर्मों में देवी के रूप में प्रतिष्ठित है। इससे अनेक रोगों का उपचार सम्भव है। इसकी प्रजातियाँ पूरे दक्षिणी पूर्वी एशिया में अधिकतर दवाईयाँ बनाने के लिए उगाई जाती हैं। यह वायरस और बैक्टेरिया दोनों से लड़ सकती है और हरेक घर में लगाई जाती है ताकि शारीरिक कष्ट आने पर तुरंत उपलब्ध हो सके।

धर्म का अनिवार्य अंग बन जाने के कारण अनेक धार्मिक कथाएँ भी इसके संग जुड़ती चली गयी हैं। हम विष्णु और सम्बन्धित देवताओं का काल निर्धारित नहीं कर सकते। सागर मंथन के समय जब ध्वंतरी अमृत कलश लेकर उपस्थित हुए तब मारे हर्ष के विष्णु की आँखों से अश्रु छलक पड़े। उसकी एक बूँद अमृत के पात्र में गिर गयी और तुलसी बन गयी। इसलिए इसे “विष्णुप्रिया” या “हरिप्रिया” भी कहा जाता है। विष्णु के सभी अवतारों में यह उनकी संगिनी अथवा पूरक है। शालिग्राम की पत्नी है एवं कृष्ण की प्रेरणा है। वैष्णव धर्म में पूजा करते समय तुलसी की उपस्थिति अनिवार्य है।

एक अन्य किंवदंति के अनुसार अपने पूर्व जन्म में इसका नाम वृंदा था और यह दैत्यराज शंखचूड़ की पत्नी थी। शंखचूड़ ने शिव को प्रसन्न करके अमरत्व का वरदान प्राप्त कर लिया। किन्तु इसके बाद घमंडवश वह आतायी बन गया। सब त्राहि-त्राहि करने लगे। तब विष्णु ने उसका घमंड चूर कर दिया और उसका वध कर दिया। उसकी प्रियतमा वृंदा उसके संग सती हो गयी। तभी से सब सुहागिनें अखंड सौभाग्य की कामना लिए सुबह शाम तुलसी को जल चढाती हैं। और साँझ को पति की कुशल घर वापसी के लिए तुलसी के सामने दिया जलाती हैं। आँगन में तुलसी का चौरा बनाना शुभ सांकेतिक है। काश्मीर से कन्याकुमारी तक और सौराष्ट्र से अरुणांचल तक, तुलसी हर घर में लगाई और पूजी जाती है। तुलसी चौरे को वृन्दावन कहा जाता है।

तुलसी को लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। अभीष्ट की अभिलाषा से इसका व्रत और पूजा करते हैं। कृष्ण पूजा में तुलसी माला और चरणामृत में तुलसी दल अवश्य डाला जाता है। कहते हैं कि यह कृष्ण की सर्वाधिक प्रिय थीं। एक बार कृष्ण के जन्म दिन पर सत्यभामा जी ने तुलादान करवाया। एक पलड़े पर कृष्ण को बैठाया गया और दूसरे पर बहुमूल्य दान सामग्री रखी गयी। कितना भी सोना चाँदी रखा गया किन्तु जिस पलड़े पर कृष्ण जी थे वह नीचा ही रहा। सत्यभामा जी बहुत निराश हो गई। तब रुक्मिणी जी ने एक पत्ती तुलसी की तोड़ी और सारे धन के ऊपर रख दी। उसी समय तुला बराबर आ गयी। कहते हैं, कृष्ण जी ने सारा धन हटवा दिया फिर भी तुलसी दल वाला पलड़ा भारी ही रहा। क्योंकि तुलसी की श्रद्धा अतुलनीय थी। तुलसी

शब्द का अर्थ भी 'अतुलनीय' है। कथा का सारांश यह था कि तुलसी यानि वृदा युगल प्रेम का अनिंद्य उद्दारण रही है। औषधि जगत में अद्वितीय है और प्रतिष्ठा में सर्वोपरि।

अब देखते हैं बैसिल का इतिहास।

उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर ग्रीक विद्वान थियोप्लास्टस ने ईसा से ३०० वर्ष पूर्व वनस्पतियों पर विस्तृत शोध किया था। २८७ ई० पू० में उसने लिखा था कि यह ५००० वर्ष पुरानी जड़ी है और इसका मूलस्थान भारत है। इस काल अवधि में यदि २००० वर्ष और जोड़ दिए जाएँ तो यह सिद्ध होता है कि बैसिल सात हजार वर्षों से पश्चिमी जगत में उगाई जाती रही है। अनेक देशों में इसके प्रयोग के आधार पर यह अवधि तय की गयी है।

मिस्र देश में फ्रांकों का काल सबसे उन्नत व शक्ति सम्पन्न था। यह अपने को सूर्यवंशी मानते थे और इनका अहम् अदम्य था। सूर्य की ऊर्जा को अपनी थाती बताकर यह अपने को आम जनता से श्रेष्ठ मानते थे और सदेह स्वर्ग की कामना करते थे। इसी अहमन्यता के चलते यह अपनी देह को मरने के बाद भी नष्ट नहीं करना चाहते थे। इसलिए ममी बनाने की कला का विकास हुआ। ममी बनाने के लिए बैसिल के तेल का उपयोग किया जाता था। यह तेल बेहद मँहगा मिलता था और कदाचित् भारत से मँगवाया जाता था। यह भी सिद्ध हुआ है कि ममी बनानेवाले भारतीय डोम होते थे। पिरामिड भी भारतीय वास्तुकला के अनुसार भारतीयों ने बनाये थे ऐसा कहा जाता है। मँहगा होने के कारण केवल राजा आदि ही इस का उपयोग कर सकते थे अतः इस जड़ी को रॉयल प्लांट कहा जाने लगा। ग्रीक भाषा में इसका शब्द है 'बैसिल'। अब चूँकि बैसिल का सम्बन्ध मृत्यु से था, ग्रीस देश में इसको घृणा का प्रतीक मानते थे। यूरोप की प्राचीन दंतकथाओं में इसे शैतान का प्रतीक भी कहा गया है।

मगर धर्मों का महत्व राजनीति से जुड़ा होता है और राजनैतिक उथल-पुथल के चलते धर्मों का स्वरूप भी बदल जाता है। अनेक धर्म इसी प्रकार सदा के लिए विलुप्त हो गए। मिस्र के विघटन के बाद प्रसिद्धि के आकाश पर ग्रीस और रोम छा गए। यह भी सूर्यपूजक संस्कृतियाँ थीं। इनके भी देवी-देवता सौर मंडल के सदस्य थे। प्रकृति की वरदायिनी शक्तियाँ, सूर्य, हवा, जल आदि। पाँच-छः शताब्दियाँ इनके वर्चस्व को ढोती रहीं। पहले ग्रीस की ख्याति को सिकंदर ने चार चाँद लगाए। अनेक युद्धों में उसने अपने निकटवर्ती राज्यों को हराया। मगर असमय मृत्यु के कारण वह अपने उत्तराधिकारी की रक्षा न कर सका। ग्रीस का राज्य केवल संस्कृति का केंद्र बन कर रह गया। इसके बाद आये रोमन सम्राट। इन्होंने अपने बाहुबल से पूर्व की ओर मिस्र पर कब्जा कर लिया। दक्षिण की ओर इजराइल को अपने राज्य में मिला लिया। उत्तर और पश्चिम के सभी राज्य इनके आधीन हो गए। २०० वर्षों तक रोमन साम्राज्य अदम्य बना रहा।

शक्ति की पराकाष्ठा में यह भी भोग विलास को अपना हक्क मानने लगे। लम्बी आयु की कामना से बैसिल इनको बहुत भाई। अपनी रासायनिक क्षमता और सुगंध के कारण यह इटली और रोम में खूब

जनप्रिय हो गयी। इसे भोजन में डाला जाने लगा। पास्ता बनाने के लिए बैसिल बहुत जरूरी है। इटली में यह बहुतायत से उगाई जाने लगी।

परन्तु जब जनता जागृत हो जाती है तो अमरत्व धरा रह जाता है। पाप को ईश्वर भी सहन नहीं करता। रोमन साम्राज्य में भी अनेक विप्लव आये। प्राकृतिक आपदाएँ आईं। सम्राट के कारिंदों से तंग जनता ने एक छोटे से कबाइली धार्मिक मत के नेता को शांति और आपसी सौहार्द्य का प्रवचन देते सूना और वह उन्हीं की मुरीद बन गयी। ईसा मसीह का प्रादुर्भाव हुआ। ईर्ष्या वश रोमन सम्राट ने उनको सूली पर लटका दिया। परन्तु उनके बलिदान का रंग तत्कालीन जनता पर जो चढ़ा, आज तक न उतरा। चौथी शताब्दी के आते आते सारा रोमन साम्राज्य ईसाई मत का अनुयायी हो गया।

३२६ ई ० में इटली के राजा कॉनस्टेंटाइन की माता श्री तीर्थ करने इजराइल गई। इनका नाम हेलेना था। इन्होंने ईसा मसीह के अवशेषों की खोज करवाई। इनको वह लकड़ी का क्रॉस मिल गया जिस पर ईसा मसीह को लटकाया गया था। यह अवशेष जीसस के निधन के ४०० वर्ष बाद मिले अतः राजमाता ने वहाँ एक विशाल चर्च बनवाया जिसे “चर्च ऑफ़ दी होली सेपल्कर” कहा जाता है। जिस स्थान पर यह क्रॉस दबा हुआ मिला वहाँ बैसिल की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। बस तभी से बैसिल ईसाई धर्म में पवित्र मान ली गयी। ईसा मसीह की अंतिम पवित्र निशानी, होली क्रॉस को जिस पर उनके लहू के निशान थे, वर्षों तक सुरक्षित रखने वाली झाड़ी रोमन कैथोलिक चर्च की पूज्या बन गयी। मृत्यु का प्रतिनिधित्व करने वाली झाड़ी, नवजीवन की संदेशवाहक मान ली गयी।

१४ सितम्बर ३३५ ई ० में इस क्रॉस को चर्च से बाहर लाकर यात्रा निकाली गयी ताकि आम जनता दर्शन लाभ कर सके और पूजा भेंट कर सके। तभी से यह दिन एक पवित्र त्यौहार मान लिया गया। इस दिन भक्तगण व्रत रखते हैं और भोजन में किसी प्रकार का माँस, मछली या अंडा आदि नहीं खाते। इस दिन की पूर्व संध्या को चर्च का पादरी एक बड़े से थाल या ट्रे में बैसिल की पत्तियाँ विद्धाता हैं और उस पर चर्च में रखे क्रॉस को रखता है। अक्सर यह क्रॉस चाँदी या सोने का होता है। फूलों से सजाकर इसके ऊपर एक सुन्दर चादर ढँक दी जाती है। यह ट्रे चर्च की वेदी पर रख दी जाती है। इस पर पवित्र पानी का छिड़काव करके बाइबिल के मन्त्र पढ़े जाते हैं। उपस्थित भक्त भजन व प्रार्थनाएँ गाते हैं।

पूजा के बाद पादरी इसे अपने सर पर उठाकर चलता है। उसके आगे कुछ चुने हुए बालक मोमबत्तियाँ लेकर चलते हैं और डीकन एक पात्र में सुगन्धित अगर जलाकर मंत्रोच्चार करता चलता है। यात्रा पूरी होने पर पादरी वापिस चर्च में इसे बाइबिल के पास रख देता है। बाइबिल खोलकर इसके पीछे खड़ी कर दी जाती है। सारा दिन यह इसी तरह सजा रहता है ताकि भक्तों की भीड़ इसको नमन कर सके। वेदी के नीचे पानी के पात्र में बैसिल की पत्तियाँ तोड़कर डाली जाती हैं। यह सभी को दिया जाता है आचमन के लिए।

यहूदी लोग व्रत में बैसिल का सेवन करते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि यह ताकत देती है।

ईसाई धर्म अनेक देशों में फैला और वहाँ की राजनीति के वश होकर इसका स्वरूप बदलता रहा। सबसे शक्तिशाली रोमन साम्राज्य इसका मूल केंद्र बना। दरअसल रोमन साम्राज्य के विस्तार के साथ ही यह यूरोप के अन्य देशों का राजधर्म बना। सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में धार्मिक क्रांति आई। प्राचीन कैथोलिक धर्म को अनेक लोकनेताओं ने मानने से इंकार कर दिया। प्रोटेस्टेंट मतावलम्बियों ने पुराने धर्म वालों को बाहर खदेड़ दिया। नाविक प्रसार के साथ ईसाई धर्म और संस्कृति अमेरिका और अफ्रीका और पूर्वी महादेशों में जा पहुँची। अमेरिका में इटली, स्पेन, पुर्तगाल और डच आदि लोगों के जाने से बैसिल भी वहाँ पहुँची। रूस और पूर्वी यूरोप में ओल्ड ऑर्थोडॉक्स चर्च का बोलबाला रहा। यहाँ अभी भी बहुत पुरानी रस्में विद्यमान हैं। चर्च की वेदी के नीचे बैसिल के गमले रखे जाते हैं। होली वाटर में बैसिल डाली जाती है। बैसिल मृतक को स्वर्ग तक जल्दी पहुँचा देगी इस विश्वास के कारण यूरोपवासी मृतक के हाथ में बैसिल की गुच्छी पकड़ा देते हैं। जैसे हमारे देश में मृतक के मुख में तुलसीदल रखा जाता है।

पुर्तगाल में बैसिल को प्रेम का प्रतीक माना जाता है। वर्ष में दो बार संत जॉन की जयंती, ७ जनवरी और संत एंटोनी की जयंती २४ जून वाले दिन प्रेमी अपनी प्रियतमा को लाल कारनेशन के फूल के साथ बैसिल का पौधा और प्रेमगीत लिखकर देते हैं। साहित्य और कलाकारों ने भी इसे अपनी कृतियों में स्थान दिया है। तो बैसिल कालान्तर में मृत्युसूचक न होकर युगल प्रेम का प्रतीक कैसे बनी ?

१३४८ई० यानि चौदहवीं शताब्दी में इटली में प्लेग की महामारी फैल गयी। फ्लोरेंस शहर में बहुत तबाही हुई। इस युग के महान कवि व लेखक जियोवानी बोकैचियो ने एक ग्रन्थ की रचना की जिसका नाम डेकामेरॉन है। इसमें १०० कहानियाँ हैं। बोकैचियो ने दस काल्पनिक पात्रों के मुख से यह कहानियाँ कहलवाईं।

प्लेग से बचने के लिए दस व्यक्तियों ने शहर से दूर एक निर्जन चर्च में डेरा डाला। इस चर्च का नाम “बैसिलिका डी सांता मारिया नोवेला” था। इनमें सात स्त्रियाँ और तीन पुरुष थे। प्लेग फैलाने वाले चूहे रात को वार करते थे अतः इन सबने रात्रिजागरण का निश्चय किया। ठण्ड में वह आग का अलाव जलाकर बैठ जाते थे। तय हुआ की प्रत्येक को रात भर कहानियाँ सुनानी होंगी बारी-बारी से। इस तरह हर रात को दस कहानियाँ सुनी सुनाई गईं। यह सौ कहानियाँ इस पुस्तक में लिखी हैं। इनमें से कुछ प्रचलित, कुछ पौराणिक, कुछ भारत की, व कुछ काल्पनिक हैं।

चौथी रात को फिलोमिना नामक स्त्री ने “लिसाबेटा” की दर्दनाक कहानी सुनाई। यह कथा बहुत प्रसिद्ध हुई और यूरोप के अनेक देशों व काल में बार-बार लिखी गयी। अनेक कलाकारों ने इस पर चित्र बनाये जो विश्व की महान कलाकृतियाँ हैं। इंग्लैंड के लेखक, जिनको अँग्रेजी का जनक माना जाता है, जेओफ्री चौसर ने भी इसी तर्ज पर अपनी कैंटरबरी टेल्स की रचना की। अपने तीर्थ यात्रियों से कहानियाँ कहलवाईं और उनमें लिसाबेटा की कहानी शामिल की। इसके चार सौ वर्ष बाद जॉन कीट्स ने इसाबेल नामक लम्बी कविता रची जो बेजोड़ है। भारत में अभी भी पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

कथा इस प्रकार है।

किसी समय इटली में एक धनी व्यक्ति रहता था। उसके दो पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्री सुन्दर और भली थी। पिता व पुत्र उसकी शादी एक धनिक व्यक्ति से करना चाहते थे जिसके पास असंख्य ओलिव (जैतून) के पेड़ थे। ताकि उसके मरने के बाद उसकी सम्पदा के मालिक बन सकें। पुत्री लिसाबेटा घर में ही काम करनेवाले एक स्वस्थ साहसी व मेहनती युवा लोरेंजो से प्रेम करती थी। जब उसके भाईयों को पता चला तो उन्होंने लोरेंजो को चुपके से मारकर बगीचे में दफना दिया। लिसाबेटा उसकी राह देखती रही और वियोग में भूखी-प्यासी डोलती रही। तब एक रात लोरेंजो ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और बताया कि वह कहाँ दफन था। लिसाबेटा ने उस स्थान को खोज लिया। वहाँ बैसिल की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। लिसाबेटा ने उसके शब को खोदकर निकाला। फिर उसका सर काटकर एक गमले में रख लिया और उसके ऊपर बैसिल की झाड़ी रोप दी। अब वह दिन रात अपने आँसुओं से इस पौधे को सिंचती रहती और उससे प्रेम भरे बयन करती। जल्दी ही उसका यह राज उसके लालची भाईयों को पता चल गया और उन्होंने उस गमले को फोड़ डाला। प्रेम की आखिरी निशानी नष्ट हो जाने पर लिसाबेटा शनैः शनैः दुःख से क्षीण होती गयी और मर गयी।

बस तभी से बैसिल प्रगाढ़ प्रेम का प्रतीक बन गयी। धार्मिक कथा में जीसस के क्रॉस की जैसे बैसिल ने रक्षा की वैसे ही इस कथा में लोरेंजो के अवशेषों की।

मेक्सिको एक कैथोलिक देश है। वहाँ लोग बैसिल की टहनी घर के बाहर टाँगते हैं ताकि लक्ष्मी आये।

फिनलैंड के हेलसिंकी शहर में हरे कृष्णा सम्प्रदाय के लोगों ने हमें मंदिर आकर दर्शन और प्रसाद के लिए राह चलते निमंत्रित किया। मंदिर एक गेराज के ऊपर जगह लेकर बनाया गया है। मूर्तियाँ अति सुन्दर लकड़ी के सिंधासन पर विराजित थीं। और उससे ही मिलता जुलता पालना तुलसी जी के लिए रखा था। इसमें तुलसी जी को अल्ट्रा वायलेट लाइट के नीचे उगाया हुआ था जो धूप की तरह प्रकाश व गर्मी दे रही थी। तुलसी जी खूब हरी भरी फैली हुई थीं। बाकायदा पूजा आरती के बाद रोटी और चार सब्जियों से भोजन किया। रोटियाँ बनानेवाली फिनिश स्वी साड़ी पहने थी और वही तुलसी जी की संरक्षिका है।

इंग्लैंड में अम्माँ राज राजेश्वरी का नया मंदिर सरे में खुला है। देवी की परिक्रमा करते समय मैंने देखा एक चौड़ी काँच की खिड़की की कानस पर बैसिल का हरा भरा झाड़ एक सुन्दर मौद में उगा कर रखा हुआ था। उस पर फूल माला, चन्दन रोली आदि से पूजा करके रेशमी वस्त्र पहनाया हुआ था।

भारत से आई यह दो बहनें - तुलसी और बैसिल



सितम्बर की हवा

डॉ. सुषम बेदी

सरसराती, फरफराती
 अपने रेशमी परों में आसमान को समेटती
 देर बाद मिलने वाली
 सहेली की तरह मुझसे लिपटती
 सितम्बर की हवा।
 कुछ भीनी, कुछ नम
 कुछ शीतल, कुछ गरम
 कुछ तेज, कुछ मध्यम
 कुछ मीठी, कुछ नमकीन
 कुछ खुशनुमा, कुछ गमगीन।
 छलाँगें लगाती, पेड़ों से लटकती
 टहनियों से खेलती, लचकाती, मरोड़ती
 पत्तियाँ ललकारती, मैदान में पटकती
 भटकती, भटकाती
 हठीली हवा।
 दरवाजे खटखटाती
 खिड़कियाँ थपथपाती
 परदे उड़ाती
 शीशे तड़तड़ाती
 हल्ला मचाती और
 रातों को जगाती
 शैतान बच्चे सी
 यह तूफानी हवा।
 ऐसी ही थी हवा उस सितम्बर ग्यारह की
 कुछ भीनी, कुछ मीठी
 दुलारती, सहलाती इस शहर को
 जब नफरत का
 प्रलयंकारी भस्मासुर
 झुलसा गया था सारी अलकापुरी।

ज्ञान के मंदिरों का अनिश्चय

डॉ. चन्द्र कान्त तिवारी

जलते सूरज को देखने के समान सच का सामना करने का साहस कितने लोगों में होता है। हर बात पर हम अपनी संस्कृति की बात करते हैं परन्तु भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए विश्व स्तर पर जानापहचाना ही जाता है और यह सांस्कृतिक विरासत हमें भाषा द्वारा ही प्राप्त हुई है।

"भाषा रेत की तरह है, जिसे मुट्ठी में सँभालकर नहीं रखें तो फिसल जाएगी।" परंतु भाषा के बारे में विचार करते समय हमें यह भी निर्णय करना होगा कि हमारे देश के विश्व स्तरीय शिक्षण संस्थान विशेष रूप से विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग क्या वाकई अपनी श्रेष्ठता का शत-प्रतिशत प्रदर्शन कर रहे हैं? क्या आज इन विभागों में जो हिंदी पढ़ाई जाती है वह छात्रों को रोजगार देने में सक्षम है? क्या बारहवीं कक्षा पास करने के बाद विद्यार्थी जब विश्वविद्यालय में बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश लेता है तो वह जिस तरह और जिस हिंदी भाषा का अध्ययन कर रहा होता है, वह पर्याप्त है? हमारे हिंदी के प्रोफेसर क्या अपना दायित्व पूर्ण रूप से निभा रहे हैं? ये सारे प्रश्न उठाना बेमानी लगता है, क्योंकि आज हिंदी भाषा और साहित्य को लेकर जो स्थिति देश के विश्वविद्यालयों में चल रही है वह स्थिति चौंकाने वाली है।

विश्वविद्यालय राजनीति के अखाड़े बन चुके हैं। प्रोफेसरों का पढ़ाने में कम राजनीति में अधिक दखल है। हिंदी जहाँ से पुष्पित-पल्लवित होकर विकास के सोपान तक चढ़ती है, वह हिंदी विभाग "दिया तले अँधेरा" की दशा को प्राप्त हो गया है। साल के जनवरी, फरवरी और अगस्त, सितम्बर माहों में हिंदी विभागों में संगोष्ठियों की बाढ़ सी आ जाती है। बाढ़ में डुबकियाँ बेचारे शोधार्थी लगाते हैं। संगोष्ठियों में शिक्षित बेरोजगार भीड़ के रूप में प्रोफेसरों के व्याख्यान सुनने को जुटाये जाते हैं और स्थिति ऐसे दोराहे पर आ गई है कि शोधार्थियों के शोध-पत्र पढ़े-सुने बगैर उन्हें राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर का प्रमाण-पत्र आसानी से मिल जाता है।

क्या देश में ऐसी भी कोई संगोष्ठी आयोजित की जा रही है जहाँ यह अनुमान लगाया जा सके कि भारत में आज कितने ऐसे हिंदी विषय में पीएचडी धारक हैं जो बेरोजगार हैं। हिंदी की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन शिक्षित पीएचडी धारकों के रोजगार की कौन चिंता करेगा? महज संगोष्ठियों में शिक्षित बेरोजगारों, पीएचडी धारकों को दाल-भात-पनीर खिलाने से हिंदी भाषा का विकास एवं संवर्धन न हो सकेगा। यह बात हिंदी के प्रोफेसरों को समझनी होगी कि हिंदी भाषा एवं साहित्य को कौशल विकास के रूप में अपनाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता समय की माँग है। महज हिंदी की राजनीति करने से दूषित मनोवृत्ति ही प्रकट होगी और कुछ न मिलेगा।

देश के कुछ नामचीन विश्वविद्यालयों में विगत कुछ वर्षों से हिंदी विभागों में साक्षात्कार की प्रक्रिया पर बड़े प्रश्न चिह्न खड़े किये जा रहे हैं। अधिकांश की चयन प्रक्रिया पारदर्शी नहीं है। आरोप लग रहे हैं कि साक्षात्कार से पहले ही यह निश्चित हो जाता है कि चयन किसका होना है। कोई कुलपति का रिश्तेदार, कोई विभागाध्यक्ष का सगा, कोई मंत्री का चेला-चपाटा तो कोई देश की बड़ी से बड़ी राजनैतिक पार्टी का आदमी। शिक्षित अध्यापकों एवं विषय के ज्ञानी उम्मीदवारों का चयन तो हो ही नहीं रहा है। साक्षात्कार से पहले ही पैनल के समक्ष जुगाड़वाद अपनी जड़ें फैला चुका होता है। निस्संदेह कहना ही पड़ेगा कि देश में हिंदी भाषा का

डंका पीटने वाले अध्यापक कम, राजनीति के दावेदार अधिक हैं। इस बात में कोई शक नहीं कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बौद्धिक दासता की जड़ें गहरी हैं। जिस कारण आधुनिक शिक्षित व्यक्ति अपने गाँव से और गाँव की जीवन परम्परा से कट जाता है। बेकारों की फौज के सामने जीवन के लिए आदर्श नहीं होता है। क्योंकि शिक्षा ने स्वावलम्बी बनाया ही नहीं, तो फिर अनुशासनहीनता, आत्मविश्वास रहित, मन से टूटा हुआ तनावग्रस्त व्यक्ति कौन-सा काम कर सकता है। यह एक विडम्बना है कि हमारी शिक्षा नीति के निर्माता विकसित देशों की शिक्षा का तो सर्वेक्षण कर आते हैं, परन्तु भारतीय जीवन की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परम्पराओं और आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। व्यावसायिक शिक्षा भी स्तरीय नहीं है।

हमारे विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय डिग्री के बाजार बन गये हैं। शिक्षा का अर्थ नई पीढ़ी में नई चेतना जागृत करके भविष्य की उसकी जिम्मेदारियों को वहन करने की बौद्धिक क्षमता प्रदान करना और उसका ऐसा मानसिक विकास करना जो राष्ट्र की बहुआयामी प्रवृत्तियों के संचालन की योग्यता प्रदान कर सके लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में जो शिक्षा नीति निर्धारित की गयी वह इन लक्ष्यों की पूर्ति में पूर्णतः विफल रही।

देश में एक नया रोग पैदा हो गया है। क्षेत्रवादी मानसिकता वाले भाषा विद्वान-प्रोफेसरान अपने क्षेत्र की बोली को लेकर अलग स्वायत्ता की माँग कर रहे हैं। संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। किन्तु हिंदी की विभिन्न बोलियों को लेकर ये कुछ क्षेत्रीय बोली के समर्थक प्रोफेसरान समाज की मानसिकता को बदलकर क्षेत्रवाद की टोपी पहनाने में लगे हुए हैं। और आठवीं अनुसूची का हवाला देकर अपने निजी स्वार्थों को हासिल करना चाहते हैं।

आज देश के अधिकांश विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग वही पुराने ढरें से हिंदी का शिक्षण कार्य चला रहे हैं। स्मार्ट क्लास, भाषा प्रयोगशाला, एडवांस टीचिंग मैथडोलाजी, शिक्षा तकनीकि का प्रयोग होता नजर नहीं आ रहा है।

विश्वविद्यालय के हिंदी विभागों में साल भर में औसत तौर पर सत्तर दिन विद्यार्थी आते हैं। विद्यार्थी को कक्षा में उपस्थिति पाने हेतु विभाग की कोई प्रतिबद्धता नजर नहीं आती। परीक्षाओं में इन विद्यार्थियों द्वारा बाजार से मॉडल पेपर-गाइड का अध्ययन कर पास होने के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचता।

हिंदी के आधार ग्रंथों का अध्ययन न तो विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है और न ही प्रोफेसरों द्वारा करवाया जाता है। इस प्रकार पूरा शिक्षण-सत्र बड़ी आसानी से बीत जाता है। भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों में कमोबेश यही हाल है। "भारतीय हिंदी परिषद" इलाहाबाद द्वारा पंजीकृत सदस्यों के एक चौथाई से भी कम सदस्य इसके सम्मेलनों में भाग लेते हैं। वहीं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नियमों को देश के सभी विश्व विद्यालयों में शत-प्रतिशत लागू नहीं किया गया है।

आज देश की उच्च शिक्षा प्रणाली कई प्रश्नों को लेकर कटघरे में खड़ी है। देश के विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञप्तियाँ निकाली जाती हैं तो वहीं विश्वविद्यालय भी समय-समय पर विज्ञप्तियाँ निकालता रहता है बेरोजगार शिक्षितों से परीक्षा शुल्क के रूप में हजारों रुपये लिये जाते हैं। और फिर कुछ समय बाद उन विज्ञप्तियों पर "तदर्थ" नियुक्ति प्रदान करा देता है। ऐसी गतिविधियाँ आज आम बात हैं।

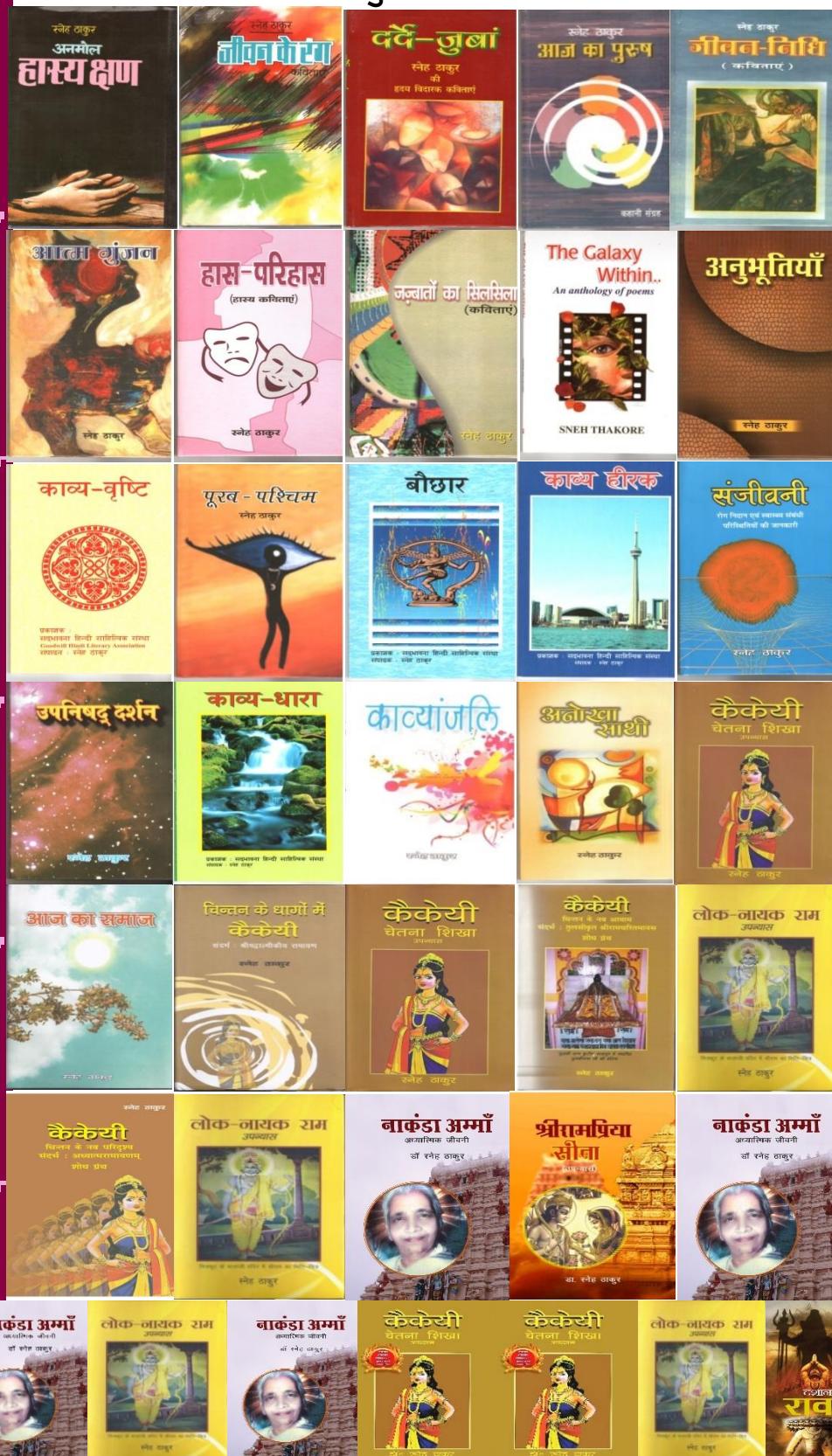
निजी कॉलेजों की मनमानी अलग एक मुद्दा है, जिनको हिंदी भाषा के विकास से कोई सरोकार नहीं। आज देश के सभी विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों को भाषा के प्रश्न पर आगे आना ही होगा, वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीयता की मानसिकता को तोड़ना होगा।

पैबंद

डॉ. आस्था नवल

माँ ने बताया था
 लगा लेना पैबंद फटे कपड़े पर
 और टूटते रिश्तों पर भी
 पैबंद लगाने से बच तो गए
 कुछ कपड़े और रिश्ते भी
 लेकिन पैबंदों की मौजूदगी ने
 कभी भूलने न दिया कि
 इनके नीचे से कपड़ा फटा है
 और रिश्ता टूटा ही है।

डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

दशानन रावण	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
कैकेयी : चेतना-शिखा	अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
लोक-नायक राम	अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(अध्यात्मिक जीवनी)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, द्वितीय संस्करण)
लोक-नायक राम	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
कैकेयी : चेतना-शिखा	अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
चिन्तन के धागों में कैकेयी - आज का समाज	संदर्भ : श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(सामाजिक लेख-संग्रह)
अनोखा साथी	(उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
काव्यांजलि	(कहानी-संग्रह)
काव्य-धारा	(काव्य-संग्रह)
उपनिषद् दर्शन	(संकलन, सम्पादन, सहभागिता एवं प्रकाशन)
संजीवनी	(ईशोपनिषद्, दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
काव्य हीरक	(स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख)
बौछार	(संकलन, सम्पादन, सहभागिता एवं प्रकाशन)
पूरब-पश्चिम	(संकलन, सम्पादन, सहभागिता एवं प्रकाशन)
काव्य-वृष्टि	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
अनुभूतियाँ	(संकलन, सम्पादन, सहभागिता एवं प्रकाशन)
The Galaxy Within	(काव्य-संग्रह)
ज़ज़्बातों का सिलसिला	(A collection of English poems)
हास-परिहास	(काव्य-संग्रह)
आत्म-गंजन	(हास्य कविताएँ)
जीवन-निधि	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
आज का पुरुष	(काव्य-संग्रह)
दर्दे-जुबाँ	(कहानी-संग्रह)
जीवन के रंग	(नज़्म व ग़ज़ल संग्रह)
अनमोल हास्य क्षण	(काव्य-संग्रह)
	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेंट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंज (प्रा.) लि.

४५ बी, आसफ अली रोड

नई दिल्ली - ११०००२, भारत

Star Publishers' Distributors

55, Warren Street

LONDON - W1T 5NW, England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित